प्रस्तावना.

सर्वे सुज्ञ जैनबांधवोने मालुम थाय जे आ श्री "वैराग्योपदेशक विविधपद संग्रह." नांमनो अत्यंत रमणीक, वैराग्यथी भरेलो, संसार स्वरूपने बतावनारो, तथा पदोनां चमत्कारोथी भरेलो ग्रंथ आपणा महामाननीक उपाध्याय श्री यशोविजयजी; विनयविजयजी तथा ज्ञानशारजी महाराजें रचेल छे, तेमां प्रथम "जसविलास" पंडित यशोविजयजी कृत, तथा "विनयविलास" पंडित विनय विजयजी कृत, अने "ज्ञानविलास" पंडित ज्ञान सारजी कृत छे. आ ग्रंथ एटलो तो रसिक तथा जैनवर्गना श्रावक, श्राविकाउने माटे उपयोगी छे के तेनुं अत्रे प्रस्तावनामां कंइ पण वर्णन नहि करतां, असो ते ग्रंथ, आधथी ते अंतसुधि वांचीने तेनो रहस्य हृदयमां धारण करवानी अमारा सुज्ञ जैन बांधवोने भलामण करीएं छैयें तथा केटलाएक दृष्टी दोष अनें बुद्धि दोष रही गया हशे तेनुं अ-

वलोकन करीने सर्व श्रेष्ट पुरुषो क्षमा पूर्वक सुधा-
रिने वांचशो. ईत्यलं विस्तरेण.

ता २५ मी मे लां. श्रावक,
शने१९०२. भीमसिंह माणेकना,
कार्य प्रवर्तको.

॥ अथ ॥

॥ श्रीजशविलास प्रारंभः ॥

॥ पद पदेखुं ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ चेतन ज्ञानकी दृष्टि निहालो ॥ चेतन० ॥ टेक ॥ मोह दृष्टि देखे सो बाउरो, होत महा मतवालो ॥ चेतन० ॥१॥ मोह दृष्टि अति चपल करतहे, भव वन वानर चालो ॥ योग वियोग दावानल लागत, पावत नांहि विचालो ॥ चेतन० ॥२॥ मोह दृष्टि कायर नर डरपें, करे अकारन टालो ॥ रन मेदान लरे नहीं अरिसुं, सूर लरेज्युं पालो ॥ चेतन० ॥३॥ मोह दृष्टि जन जनके परवश, दीन अनाथ दुखालो ॥ मागे भीख फरे घर घरसुं, कहे मुजकुं कोउ पालो ॥ चेतन० ॥४॥ मोह दृष्टि मद मदिरामाती, ताको होत उगालो ॥ पर अवगुन राचे सो अहनिस, काग असुचि ज्यों कालो॥ चेतन० ॥ ५ ॥ ज्ञान दृष्टिमां दोष न एते, करो ज्ञान अजुआलो ॥ चिदानंद घन सुजस वचन रस, सज्जन हृदय पखालो ॥ चेतन० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ पद बीजुं ॥

॥ राग सारंग ॥ कंतविनु कहो कौन गति नारी ॥ टेक ॥ सुमति सखी जइ वेगी मनावो, कहे चेतन सुन प्यारी ॥ कंत०॥१॥ धन कन कंचन महल मालिए, पिउ विन सबहि उजारी ॥ निद्राजोग लहु सुखनांही, पियु वियोग तनु जारी ॥ कंत०॥२॥ तोरे प्रीत पराइ दुरिजन, अठते दोष पुकारी ॥ घर भंजनके कहन न कीजें, कीजे काज विचारी ॥ कंत० ॥३॥ विभ्रम मोह महामद विजुरी, माया रेन अंधारी ॥ गर्जित अरति लवे रति दादुर, कामकी भइ असवारी ॥ कंत० ॥४॥ पिउ मिलवेकुं मुफ मन तलफे, में पिउ खिजमतगारी ॥ ज्रुरकी देइ गये पिउ मुफकुं, न लहे पीर पीयारी ॥ कंत० ॥ संदेश सुनी आए पिउ उत्तम, भइ बहुल मनुहारी ॥ चिदानंद घन सुजस विनोदें, रमे रंग अनुसारी ॥ कंत० ॥६॥

॥ पद त्रीजुं ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ परमगुरुजैन कहो क्यों होवे, गुरु उपदेश विना जन मूढा, दर्शन जैन विगोवे ॥ परम गुरु जैन कहो क्यों होवे ॥टेक॥१॥ कहत कृ-

पानिधि समजस कीजे, कर्म मयल जो धोवें ॥ व-
हुल पापमल अंग न धारे, शुद्ध रूप निज जोवे॥ प-
रम०॥२॥ स्यादवाद पूरन जो जाने, नय गर्भित ज-
स वाचा ॥ गुन पर्याय द्रव्य जो बूझे, सोइ जैन है
साचा ॥परम०॥ ३ ॥ क्रिया मूढमति जो अज्ञानी,
चालत चाल अपूठी ॥ जैनदशा उनमेंही नाही,
कहे सो सवही जूठी ॥परम०॥४॥ पर परनति अपनी
कर माने, किरिया गर्वे घेहेलो ॥ उनकुं जैन कहो
क्युं कहियें, सो मूरखमें पहिलो ॥परम०॥५॥ ज्ञान
भाव ज्ञान सबमांही, शिव साधन सहहिए ॥ नाम
भेखमें काम न सीझे, भाव उदासे रहिए ॥ परम०
॥६॥ ज्ञान सकल नय साधन साधो, क्रिया ज्ञानकी
दासी ॥ क्रिया करत धरतुहे ममता, याहि गलेमें
फांसी ॥परम०॥७॥ क्रिया विना ज्ञान नहिं कबहुं,
क्रिया ज्ञान विनु नांही ॥ क्रिया ज्ञान दोउ मिलत
रहतुहे, ज्यों जल रस जलमांही ॥ परम० ॥८॥
क्रिया मगनता बाहिर दीसत, ज्ञान शक्ति जस
भांजे ॥ सदगुरु शीख सुने नहीं कबहुं, सो जन ज-
नतें लाजे ॥परम०॥९॥ तत्व बुद्धि जिनकी परनति

है, सकल सूत्रकी कूंची ॥ जग जसवाद वदे उन हींको, जैन दशा जस ऊंची ॥ परम० ॥१०॥ इति॥

॥ पद चोथुं ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ परम प्रभु सब जन शब्दें ध्यावे ॥ जब लग अंतर भरम न भांजे, तवलग को- ऊ न पावे ॥ परम प्रभु० ॥ १ ॥ टेक ॥ सकल अंस देखे जग जोगी, जो खिनु समता आवे ॥ ममता अंध न देखे याको, चित्त चिहुं ठरे ध्यावे ॥ परम प्रभु०॥२॥ सहज शक्ति अरु भक्ति सुगुरुकी, जो चित्त जोग जगावे ॥ गुण पर्याय द्रव्यसुं अपने, तो लय कोउ लगावे ॥ परम प्रभु० ॥ ३ ॥ पढत पूरान वेद अरु गीता, मूरख अर्थ न भावें ॥ इत उत फरत ग्रहत रसनाही, ज्यों पशु चर्वित चावे ॥ परम प्रभु० ॥४॥ पुद्गलसें न्यारो प्रभु मेरो, पुद्गल आप छिपावे॥ उनसें अंतर नहीं हमारे, अब कहां भागो जावे ॥ परम प्रभु० ॥५॥ अकल अलख अज अजर निरंजन, सो प्रभु सहज सुहावे ॥ अंतरजामी पूरन प्रगट्यो, सेवक जस गुन गावे ॥ परम प्रभु० ॥६॥ इति॥

॥ पद पांचमुं ॥

॥ राग उपर प्रमाणे ॥ चेतन जो तुं ज्ञान अभ्यासी ॥ आपहि बांधे आपहि छोडे, निजमति शक्ति विकासी ॥ चेतन० ॥१॥ टेक ॥ जो तुं आप स्वभावें खेले, आसा छोरी उदासी ॥ सुरनर किन्नर नायक संपति, तो तुज घरकी दासी ॥ चेतन०॥२॥ मोह चोर जन गुन धन लूसे, देत आस गल फांसी॥ आसा छोर उदास रहेजो, सो उत्तम संन्यासी ॥ चेतन० ॥ ३ ॥ जोग लइ पर आस धरतहे, याही जगमें हांसी ॥ तुं जाने में गुनकुं संचुं, गुनतो जावे नासी ॥चेतन०॥४॥ पुद्गलकी तुं आस धरतहे, सो तो सवहिं विनासी ॥ तुं तो भिन्नरूप हे उनतें, चिदानंद अविनासी ॥ चेतन० ॥५॥ धन खरचे नर बहुत गुमाने, करवत लेवे कासी ॥ तोभी दुःखको अंत न आवे, जो आसा नहि घासी ॥ चेतन०॥६॥ सुखजल विषम विषय मृगतृष्णा, होत मूढमति प्यासी ॥ विभ्रम भूमि भइ पर आसी, तुं तो सहज विलासी ॥चेतन०॥ ७ ॥ याको पिता मोह दुःख भ्राता, होत विषय रति मासी ॥ भव सुत भरता अविरति प्रानी,

मिथ्यामति हे हांसी ॥ चेतन० ॥ ८ ॥ आसा ओर रहे जो जोगी, सो होवे सिव वासी ॥ उनको सुजस वखाने ज्ञाता, अंतरदृष्टिप्रकासी ॥चेतन०॥९॥इति॥

॥ पद ७ हुं ॥

॥ राग कनडो ॥ अजब गति चिदानंद घनकी ॥ टेक ॥ जव जंजाल शक्तिसुं होवे, उलट पुलट जिनकी ॥ अजब०॥१॥ भेदी परनति समकित पायो, कर्मवज्र घनकी ॥ ऐसी सवल कठिनता दीसे, कोमलता मनकी ॥ अजब० ॥ २ ॥ जारी भूमि जयंकर भूरी, मोहराय रनकी ॥ सहज अखंड चंडता याकी, क्षमा विमल गुनकी ॥ अजब० ॥ ३ ॥ पापवेली सव ज्ञान दहनसे, जाली जववनकी ॥ शीतलता प्रगटी घट अंतर, उत्तम लछनकी ॥ अजब० ॥४॥ ठकुराइ जगजनते अधिकी, चरन करन घनकी ॥ ऋद्धि वृद्धि प्रगटे नीज नामे, ख्याति अकिंचनकी ॥ अजब० ॥ ५ ॥ अनुजवविनु गति कोउ न जाने, अलख निरंजनकी ॥ जस गुन गावत प्रीती निवाहो, उनके समरनकी ॥ अ० ॥ ६ ॥

॥ पद सातमुं ॥

॥ राग सारंग ॥ जिउ लाग रह्यो परजावमें, टेक ॥ सहज स्वजाव लखे नहिं अपनो, परियो मोह जंजालमें ॥ जिउ० ॥ १ ॥ वंछे मोक्ष करे नहि करनी, डोलत ममता वाउमें ॥ चहे अंध ज्युं जलनिधि तरवो, बेठो कांणे नाउमें ॥ जिउ० ॥ २ ॥ अरति पिशाची परवश रहेतो, खिनहु न समरयो आउमें ॥ आप बचाय सकत नहिं मूरख, घोर विषयके घाउमें ॥ जिउ० ॥ ३ ॥ पूर्व पुण्य धन सवहि ग्रसतहे, रहत न मूल बढाउमें ॥ तामें तुज केसे धनी आवे, नय व्यवहारके दाउमें ॥ जिउ० ॥ ४ ॥ जस कहे अब मेरो मन लीनो, श्रीजिनवरके पाउमें ॥ याहि कल्यान सिद्धिको कारन, ज्युं वेधकरस खाउमें ॥ जिउ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद आठमुं ॥

॥ राग विलाउल ॥ मेरे साहिब तुंम हि हो, श्री पास जिणंदा ॥ खिजमतगार गरीब हुं, मे तेरा बंदा ॥ मेरे० ॥ १ ॥ टेक ॥ में चकोर करूं चाकरी, जब तुमहिं चंदा ॥ चक्रवाक में हुइ रहों, जब

तुमहिं दिणंदा ॥ मेरे० ॥ २ ॥ मधुकरपरे में रत-जनुं, जब तुम अरविंदा ॥ चक्ति करों खगपति परे, जब तुमहिं गोविंदा ॥ मेरे० ॥ ३ ॥ तुम जब गर्जित घन जये, तब में शिख बंदा ॥ तुम सायर जब में तदा, सुरसरिता अमंदा ॥ मेरे० ॥ ४ ॥ दूर करो दादा पासजी, जवडुःखका फंदा ॥ वाचक जश कहे दासकुं, दियो परमानंदा ॥ मेरे० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद नवमुं ॥

॥ राग सामेरी ॥ मेरे प्रजुसुं प्रगट्यो पूरन राग ॥ टेक ॥ जिन गुन चंद किरनसुं उमग्यो, सहज समुद्र अथाग ॥ मेरे० ॥ १ ॥ ध्याता ध्येय जये दोउ एकहु, मिट्यो जेदको जाग ॥ कुल विदारी चले जब सरिता, तब नहिं रहत तडाग ॥ मेरे० ॥ ॥ २ ॥ पूरन मन सब पूरन दीसे, नहिं डुविधाको लाग ॥ पाउ चलतपनही जे पहिरे, नहि तस कंटक लाग ॥ मेरे० ॥ ३ ॥ जयो प्रेम लोकोत्तर जूठो, लोक बंधको ताग ॥ कहो कोउ कछु हमतो न रूचे, छुटि एक वीतराग ॥ मेरे० ॥ ४ ॥ वासत है जिन गुन मुज दिलकुं, जेसो सुरतरु बाग ॥ ओर वास-

नालगेन तातें, जस कहे तुं वडजाग॥ मेरे०॥५॥ इति॥

॥ पद दशमुं ॥

॥ राग गोडसारंग तथा पूर्वी ॥ पसारी कर लीजे, इक्षुरस जगवान ॥ चढत सिखा श्रेयांस कुमरकी, मानु निरमल ध्यान ॥ पसारी० ॥ १ ॥ टेक ॥ में पुरुषोत्तम करकी गंगा, तुं तो चरन निदान ॥ इत गंगा अंबर नर जनकुं, मानुं चली असमान ॥ ॥ पसारी० ॥ २ ॥ किधो विधु बिंब सुधासूं चाहत, आप मधुरता मान ॥ किधो दायककी पुण्य परंपर, दाखन सरगविमान ॥ पसारी० ॥ ३ ॥ प्रजुकर इक्षुरस देखी करत हे, ऐसी उपमा ज्ञान ॥ जश कहे चिन विन पात्र मिलावें, युं नविकुं जिन ज्ञान ॥ पसारी० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद अगीयारमुं ॥

॥ राग अड्डाणो ॥ शीतल जिन मोहि प्यारा ॥ टेक ॥ जुवन विरोचन पंकज लोचन, जिउके जिउ हमारा ॥ शीतल० ॥१॥ ज्योतिशुं ज्योत मिलत जब ध्यावें, होवत नहि तब न्यारा ॥ बांधी मूंठी खुले जब माया, मिटे महा भ्रम जारा ॥ शीतल० ॥२॥

तुम न्यारे तव सवहि न्यारा, अंतर कुटुंब उदारा ॥ तुमहीं नजिक नजिक हे सवहीं, ऋद्धि अनंत अपारा ॥ शीतल० ॥ ३ ॥ विषय लगनकी अगनि बूजावत, तुम गुन अनुजव धारा ॥ जइ मगनता तुम गुनरसकी, कुन कंचन कुन दारा ॥ शीतल० ॥ ४ ॥ शीतलता गुन होर करत तुम, चंदन काह विचारा ॥ नामेहीं तुम ताप हरतहे, वाकुं घसत घसारा ॥ ॥ शीतल० ॥ ५ ॥ करहु कष्ट जन बहुत हमारे, नाम तिहारो आधारा ॥ जस कहे जनममरण जय जागो, तुम नामे जवपारा ॥ शीतल० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ पद वारमुं ॥

॥ राग वेलावल ॥ प्रजु तेरो वचन सुन्यो जवहींथें सुविहान ॥ टेक ॥ तवहींथें तत्त्व दाख्यो, चाख्यो रस ध्यान ॥ जाव नाली ए जागी, मानुं कीधो सुधापान ॥ प्रजु तेरो० ॥ १ ॥ श्रुतचिंता ज्ञान सोतो, खीर नीर वान ॥ विषय तृष्णा बुकावे, सोहि साचो ज्ञान ॥ प्रजु तेरो० ॥ २ ॥ गायन हरन तातें, नादे धरे कान ॥ तेसेहिं करत मोहिं, संत गुन ध्यान ॥ प्रजु तेरो० ॥ ३ ॥ प्रानतें अधिक सांइ, केसे कहुं

ग्रान ॥ ग्रानथी अजिन्न दाख्यो, प्रत्यक्ष प्रमान ॥
प्रजु तेरो० ॥४॥ जिन्न ने अजिन्न कछु, स्याद्वादें वान ॥
जस कहे तु हें तु हें, तुं हें जिन जान ॥ प्र० ॥५॥

॥ पद तेरमुं ॥

॥ राग परज ॥ चेतन राह चले उलटे ॥ टेक ॥
नखशिखलो बंधनमां वेठे, कुगुरु वचन गुलटे ॥
चेतन० ॥ १ ॥ विषय विपाक जोग सुख कारन, तिनमें तुम पलटे ॥ चाखी ठोर सुधारस समता, जवजल विषय घटे ॥ चेतन० ॥ २ ॥ जवोदधि बिच रहे तुम ऐसे, आवत नाहिं तटे ॥ जिहां तिमिंगल घोर रहतुहे, चार कषाय कटे ॥ चेतन० ॥ ॥ ३ ॥ वरविलास वनिता नयनके, पडे पास पलटे ॥ अब परवश जागे किहां जाओगे, काले मोहजटे ॥ चेतन० ॥ ४ ॥ मन मेले जो किरिया कीनी, ठगे लोक कपटे ॥ उनकुं फलविनुं जोग मिटेगो, तुमकुं नांहि रटे ॥ चेतन० ॥ ५ ॥ सीख सुनी अब रहो सुगुरुके, चरणकमल निकटे ॥ युं करते तुम सुजस लहोगे, तत्त्व ज्ञान प्रगटे ॥ चेतन० ॥ ६ ॥ इति॥

॥ पद चौदमुं ॥

॥ राग नायकी कनडो ॥ चेतन ममता छांड परीरी, दूर परीरी ॥ चेतन० ॥ टेक ॥ पर रमनिसुं प्रेम न कीजें, आदरी समता आप वरीरी ॥ चेतन० ॥ १ ॥ ममता मोह चंडालकी बेटी, समता संयम नृप कुमरीरी ॥ ममता मुख दुर्गंध असत्यें, समता सत्य सुगंध भरीरी ॥ चेतन० ॥ २ ॥ ममतासें लरते दिन जावे, समता नहिं कोउ साथ लरीरी, ममता हेतु बहुत हे दुश्मन, समताके कोउ न अरीरी ॥ चेतन० ॥ ३ ॥ ममताकी दुर्मति हे आली, डाकिनी जगत अनर्थ करीरी ॥ समताकी शुभमति हे आली, परउपगार गुणे समरीरी ॥ चेतन० ॥ ४ ॥ ममता पुत्त भए कुल खंपन, सोक वियोग महा मत्सरीरी ॥ समता सुत होवेगे केवल, रहे दिव्य निशान धुरीरी ॥ चेतन० ॥ ५ ॥ समता मग्न रहे जो चेतन, जो ए धारे शीख खरीरी ॥ सुजसविलास लहेगो तो तुं, चिदानंदघन पदवि वरीरी ॥ चेतन० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ पद पन्नरमुं ॥

॥ राग नायकी कनडो॥या गति कौन हे सखी तोरी, कौन हे सखी तोरी ॥ टेक ॥ इत उत युंहि फिरत हे घहेली, कंत गयो चित चोरी ॥ यागति० ॥ १ ॥ चितवत हे विरहानल बुजवत, सिंच नयन जल जोरी ॥ जानत हे उहां हे वडवानल, जलण जल्यो जिहुं ओरी ॥ यागति० ॥ २ ॥ चल गिरनार पिया दिखलाउं, नेह निहावन धोरी ॥ हिलिमिलि मुगति मोहोलमें खेले, प्रनमे जस या जोरी ॥ यागति० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद शोलमुं ॥

॥ राग सारंग ॥ हम मगन जए प्रजु ध्यानमें, टेक ॥ विसर गइ डुविधा तन मनकी, अचिरा सुत गुन ज्ञानमें ॥ हम० ॥ १ ॥ हरिहर ब्रह्म पुरंदरकी ऋद्धि, आवत नांहि कोउ मानमें ॥ चिदानंदकी मोज मची हे, समतारसके पानमें ॥ हम० ॥ ॥ २ ॥ इतने दिन तुं नांहि पिछान्यो मेरो, जन्म गमायो अजानमें ॥ अवतो अधिकारी होइ वेठे, प्रजु गुन अखय खजानमें ॥ हम० ॥ ३ ॥ गइ दी-

नता सवही हमारी, प्रभु तुज समकित दानमें ॥ प्रभु गुन अनुभवके रस आगें, आवत नही कोउ ध्यानमे ॥ हम० ॥ ४ ॥ जिनहि पाया तिनहि छिपाया, न कहे कोउके कानमें ॥ ताली लागी जब अनुभवकी, तब जाने कोउ शानमें ॥ हम० ॥ ५ ॥ प्रभु गुन अनुभव चंद्रहास्य ज्यो, सोतो न रहे म्यानमें ॥ वाचक जश कहे मोह महा अरि, जीत लीयो हे मेदानमें ॥ हम० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ पद सत्तरमुं ॥

॥ राग काफी ॥ देखतही चित्त चोर लीयो हे, देखतही चित्त चोर लीयो ॥ सामको नाम रुचे मोहि अहनिस, साम विना कहा काज जीयो ॥ देखतही० ॥ १ ॥ टेक ॥ सिद्धवधूके लीए मुझ छोरी, पशुअनके सिर दोष दीयो ॥ परकी पीर न जाने तासों, वैर वसायो जो नेह कीयो ॥ देखतही० ॥ २ ॥ प्रान धरुं में प्रानपिया विन, वज्रहथें मोहि कठिन हियो ॥ जस प्रभु नेमि मिले दुःख डार्यो, राजुल शिवसुख अमृत पियो ॥ देखतही० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद अढारमुं ॥

॥ राग कल्याण ॥ सखुने प्रजु जेटे, अंतरीक प्रजु जेटे ॥ स० ॥ टेक ॥ जगत वहाल हित दाइ, स० ॥ मोह चोर जब जोर फिरावत, तब समरथो प्रजु जेटे ॥ स० ॥ १ ॥ ओर सखाइ चार दिवसके, साच सखा प्रजु वेठे ॥ इतनो आप विवेक विचारो, मायामें मत लेटे ॥ स० ॥ २ ॥ जामणडे तो जूख न जांगे, विनुं जोजन गए पेटे ॥ जगवंत जक्ति विना सवि निष्फल, जस कहे जक्तिमें जेटे ॥ स० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद ओगणीशमुं ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ जिन चरण सरन ग्रहुं ॥ टेक ॥ हृदयकमलमें ध्यान धरतुहे, सिर तुज आण वहुं ॥ जिन० ॥ १ ॥ तुज सम खोल्यो देव खलकमें, पेख्यो नांहिं कहुं ॥ तेरे गुनकी जपुं जपमाला, अहनिसि पाप दहुं ॥ जिन० ॥२ ॥ मेरे मनकी तुम सब जानो, क्या मुख बहुत कहुं, कहे जस विजय करो तुम साहिब, ज्युं जव दुःख न लहुं ॥ जिन० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद वीशमुं ॥

॥ राग जयजयवंती ॥ अजब बनीहै जोरी, अर्धंग धरीहै गोरी ॥ शंकर शंकहि छोरी, गंगसिर धरीहै ॥ अ० ॥ १ ॥ प्रेमके पीवत प्याले, होत महा मतवाले, न चलत तिहूं पाले, असवारी खरी है ॥ अ० ॥ २ ॥ ज्ञानीको एसो उत्साह, समताके गले बांह, सिरपर जगनाह, आण सुर सरीहै ॥ अ० ॥ ३ ॥ लोकके प्रवाह नांहि, सुजस विलास मांहि, चिदानंदघन ग्राहि, रति अनुसरी है ॥ अ० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद एकवीशमुं ॥

॥ राग उपर प्रमाणे ॥ धर्मके विलास वास, ज्ञानके महा प्रकाश, दास जगवंतके, उदास भाव लगे हैं ॥ समता नदीतरंग, अंगही उपंग संग, मज्ञान प्रसंग रंग, अंग जगमगेहैं ॥ धर्म० ॥ १ ॥ कर्मके संग्राम घोर, लरे महा मोह चोर, जोर ताको तोरवेकुं, सावधान जगेहैं ॥ शीलको धरी सनाह, धनुष महा उत्साह, ज्ञान बानके प्रवाह, सब वेरी भगे हैं ॥ धर्म० ॥ २ ॥ आपो है प्रथम सेन,

॥ ३ ॥ नव लीला वासित सुर डारे, तुंपर ववारी ॥ में मेरो मन निश्चल कीनो, तुम आण सिरधारी ॥ कृपन० ॥ ४ ॥ ऐसो साहिब नहिं को उ जगमें, यासुं होय दिलदारी ॥ दिलहि दलाल प्रेमके बिचे, तिहां हठ खेंचे गमारी ॥ कृपन० ॥ ५ ॥ तुंमहि साहिब मैं हुं बंदा, या मत देऊ विसारी ॥ श्रीनयविजय विबुध सेवकके, तुमहो परम उपकारी ॥ कृपन० ॥ ६ ॥

॥ पद त्रेवीशमुं ॥

॥ राग वेलावल ॥ गौतम गणधर नमियें हो, अहनिसि गौतम गणधर नमियें ॥ टेक ॥ नाम जपत नवही निधि पइए, मन वंछित सुख लहिएं हो ॥ अह० ॥ १ ॥ घर अंगन जो सुरतरु फलियो, कहा काज वन जमियें ॥ सरस सुरभि घृत जो हुवे घरमें, तो क्यों तेले जमियें हो ॥ अह० ॥ ॥ २ ॥ तेसी श्रीगौतम गुरु सेवा, ओर ठोर क्युं रमियें ॥ गौतम नामें भवजल तरिएं, कहा बहुत तनु दमियें ॥ अह० ॥ ३ ॥ गुण अनंत गौतमके समरन, मिथ्यामति विष गमियें ॥ जस कहे गौतम

दीशे, वेतो अपने पास ॥ अव० ॥ ३ ॥ ओर कव हुं कोउ कारन कोप्यो, बहुत उपाय न तूसे ॥ चिदानंदमें मगन रहतुहे,वेतो कबहुं न रुसे ॥अव०॥४॥ ओरनकी चिंता चिंतीन मिटे,सब दिन धंधे जावे ॥ थिरता गुन पूरन सुख खेले, वेतो अपने जावें ॥ अव० ॥ ५ ॥ पराधीन हे जोग ओरको, जातें होत वियोगी ॥ सदा सिद्ध समताइ विलासी, वेतो निजगुन भोगी ॥ अव० ॥ ६ ॥ ज्यों जानो त्यों युगति न जानो, में तो सेवक उनको ॥ पक्षपात तो परसुं होवे, राग धरतहुं गुनको ॥ अव० ॥ ७ ॥ भाव एक हे सब ज्ञानीको, मूरख भेद न भावे ॥ अपनो साहिब जो पहिचाने, सो जस लीला पावे ॥ अ० ॥ ८ ॥

॥ पद छवीशमुं ॥

॥ राग भूप कल्याण ॥ सयनकी नयनकी बयनकी छबी नीकी ॥ मयनकी गोरीतकी लगी मोहि अखियां ॥ मनकी लगन भर अंगनीय लागे अली, कल न परत कछु कहा कहुं बतीयां ॥ सयनकी० ॥ १ ॥ मोहन मनाउ मानी, कहा बनी रति ठानी, शिवा नंदन मानो बिनतियां ॥ गुन गह्यो जस

॥ पद अठावीशमुं ॥

॥ राग केदारो दरबारी ॥ आवे हाथी दल सा- ज गाजते, नेमजी घर आवे, ए देशी ॥ प्रभुवल दे- खी सुरराज, लाजतो इम बोले ॥ देखो बल जांग्यो भ्रम सेरो, कोनहि जग तुम तोले ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ टेक ॥ चरन अंगुठे कंपित सुरगिरि, मानुं नाचत डोले ॥ इन मिसि प्रभु मोहि उपर तूठे, हरख हि- याको खोले ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ झरत शेषधर हरत महोदधि, जय भंगुर भूगोले ॥ दिसि कुंजर दि- ग्मूढ जए तव, सबहिं मिलत एक टोले ॥ प्रभु० ॥ ॥ ३ ॥ लीला बाल अबाल पराक्रम, तीन जुवन धंधोले ॥ जस प्रभु वीर महेर अब कीजें, बहुरि हुन परिहु भोले ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद ओगणत्रीशमुं ॥

॥ राग उपर प्रमाणे ॥ प्रभु धरी पीठ वेताल बाल, सात तालसों वाधे ॥ काल रूप विकराल भ- यंकर, लागत अंबर आवे ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ टेक ॥ बाल कहे को वीर ले गयो, परिजन देव आराधे ॥ तिस्र त्रिजाग चित्त वीर न खोभ्यो, बल अनंत कुन

रस अंजन, दुरजन रवि चरनी ॥तुज मूरत निरखे सो पावे, सुखजस लील घनी ॥ अब०॥ ६ ॥ इति॥

॥ पद एकत्रीशमुं ॥

॥ राग प्रभाति ॥ विमलाचल नित वंदिये, कीजे एहनी सेवा ॥ मानु हाथ ए धर्मनो, शिवतरु फल लेवा ॥ विमलाचल० ॥ १ ॥ टेक ॥ उज्वल जिनग्रह मंडले, तिहां दीपे उत्तंगा ॥ मानु हिमगिरि विभ्रमे, आइ अंबर गंगा ॥ विमलाचल० ॥ २ ॥ कोइ अनेरु जग नहीं, तीरथ ए तोले ॥ एम श्री मुख आगलें, श्री सीमंधर बोले ॥ विमलाचल० ॥ ॥ ३ ॥ जे सघलां तीरथ करे, यात्रा फल लहिएं ॥ तेहथी ए गिरि भेटतां, शतगुण फल लहिएं ॥ विमलाचल० ॥ ४ ॥ जन्म सफल होए तेहनो, जो ए गिरि वंदे॥सुजस विजय संपद लहे, ते नर चिर नंदे ॥ विमलाचल० ॥ ५ इति ॥

॥ पद बत्रीशमुं ॥

॥ राग देव गंधार ॥ देखो माइ अजब रूप जिनजीको ॥ देखो०॥ टेक ॥ उनके आगें और सबनको, रूप लगे मोहि फीको ॥ देखो०॥ १ ॥ लोचन

घन धाम ॥ जटाधार वट भस्म लगावत, रासभ स हतु हे धाम ॥ जबलग० ॥ ३ ॥ एतेपर नहीं योगकी रचना, जो नहि मन विश्राम ॥ चित अंतर पट छलवेकुं चिंतवत, कहा जपत मुख राम ॥ जबलग० ॥ ४ ॥ वचन काय गोपें दृढ न धरे, चित्त तुरंग लगाम ॥ तामे तुं न लहे शिवसाधन, जिउ कण सुने गाम ॥ जबलग० ॥ ५ ॥ पढो ज्ञान धरो संजम किरिया, न फिरावो मन ठाम ॥ चिदानंद घन सुजस विलासी, प्रगटे आतमराम ॥ जबलग० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ पद पांत्रीसमुं ॥

॥ राग सारंग ॥ चतुरनर सामायक नय धारो ॥ टेक ॥ लोक प्रवाह छांडकर अपनी, परिणति शुद्ध विचारो ॥ चतुरनर० ॥ १ ॥ द्रव्यत अक्षय अभंग आतमा, सामायक निज जाति ॥ शुद्ध रूप समतामय कहीये, संग्रह नयकी वाते ॥ चतुरनर० ॥ २ ॥ अब व्यवहार कहे ए नय जन, सामायक हुइ जावे ॥ तातें आचरना सो माने, एसा नैगम गावे ॥ चतुरनर० ॥ ३ ॥ आचरना रिजुसूत्र

सिघलकी,विनु उपयोग न माने ॥ आचारी उपयोगी आतम, सो सामायक जाने ॥ चतुरनर० ॥ ४ ॥ शब्द कहे संजत जो ऐसो,सो सामायक कहियें॥ चोथे गुनठाने आचरना,उपयोगें जिन्न लहियें ॥ चतुरनर० ॥ ५ ॥ अप्रमत्त ठाणे इर्याको, समजिरूढ नय साखी ॥ केवल ज्ञान दशा थिति उनकी, एवंजूते जाखी ॥ चतुरनर० ॥ ६ ॥ सामायक नय जो हु न जाने, लोक कहे सो माने ॥ ज्ञानवंतकी संगति नाहीं, रहियो प्रथम गुनठाने ॥ चतुर० ॥७॥ सामायक नर अंतर दृष्टे, जो दिनदिन अज्यासें ॥ जग जसवाद लहे सो बैठो, ज्ञानवंतके पासें ॥ चतुरनर० ॥ ८ ॥

॥ पद ब्रीशमुं ॥

॥ राग विहागडो ॥ सबल या ठाक मोह मदिराकी ॥ टेक ॥ मिथ्यामतिके जोरें गुरुकी, वचन शक्ति जिहां थाकी ॥ सबल० ॥ १ ॥ निकट दशा ठांम जक ऊंची, दृष्टि देतहे ताकी ॥ न करे किरिया जनकुं जाखे, नहि चत्रथिति पाकी ॥ सबल० ॥२॥ जाजन गत जोजन कोउ ठांडी, दसत्तर जिऊं दोरे॥

॥ पद ओगणचालीशमुं ॥

॥ राग शोनी ॥ चिदानंद अविनासीहो, मेरो चिदानंद अविनासी हो ॥ टेक ॥ कोर मरोर करमकी मेटे, सहज सन्नाव विलासीहो ॥ चिदानंद० ॥ ॥ १ ॥ पुजल मेल खेलजो जगको, सोतो सवहि विनासीहो ॥ पूरन गुन अध्यातम प्रगटें, जागे जोग उदासीहो ॥ चिदानंद० ॥ २ ॥ नाम नेख किरियाकुं सवही, देखे लोक तमासीहो ॥ चिन मूरत चेतन गुन चिने, साचो सोउ सन्यासीहो ॥ चिदानंद० ॥ ३ ॥ दोरी देवारकी किति दोरे, मति व्यवहार प्रकासीहो ॥ अगम अगोचर निश्चय नयकी, दोरी अनंत अगासी हो ॥ चिदानंद० ॥ ४ ॥ नानाघटमें एक पिछाने, आतमराम उपासी हो ॥ नेद कलपना में जरु नूल्यों, लुब्ध्यो तृष्णा दासीहो ॥ चिदानंद० ॥ धर्म सिद्धि नवनिधि हे घटमें, कहा ढुंढत जइ काशीहो ॥ जस कहे शांत सुधारस चाख्यो, पूरन ब्रह्म अन्यासीहो ॥ चिदा० ॥ ६ ॥

॥ पद चालीशमुं ॥

॥ राग होरी ॥ हरी नारी टोले मिलि रंग हो

होरी ॥ टेक ॥ फाग रमे तजी लाल, रंग हो होरी, देव-रकुं घेर रही ॥ रंगहो० ॥ व्याह मनावन काज लाल ॥ रंग० ॥ १ ॥ ताल कंसाल मृदंगसुं ॥ रंग० ॥ मधुर बजावत चंग लाल ॥ रंग० ॥ गयव गुलाल नयन भरे ॥ रंग० ॥ बश्न बजावे अनंग लाल ॥ रंग० ॥ २ ॥ पिचकारी छांटे पीय ॥ रंग० ॥ भरी भरी केसर नीर लाल ॥ रंग० ॥ मानुं मदन करती छटा ॥ रंग० ॥ अबवे उडावे अंबीर लाल ॥ रंग० ॥ ३ ॥ योवन मद मदिरा छाकी ॥ रंग० ॥ गावत प्रेम धमाली लाल ॥ रंग० ॥ राचत माचत नाचती ॥ रंग० ॥ कौतुकसुं करे श्याली लाल ॥ रंग० ॥ ॥ ४ ॥ सोहे मुख तंबोलसुं ॥ रंग० ॥ मानु संध्यायुत चंद लाल ॥ रंग० ॥ पूरित केसर फुलेलसुं ॥ रंग० ॥ करत मेह ज्युं बुंद लाल ॥ रंग० ॥ ५ ॥ यण भुज भूल देखावती ॥ रंग० ॥ बाह लगावत कंठ लाल ॥ रंग० ॥ कहे देवर परनो पीया ॥ रंग० ॥ परना-विन पुरुष उलंठ लाल ॥ रंग० ॥ ६ ॥ रूख मिलित रहे वेलीसुं ॥ रंग० ॥ सागर गंगा रंग लाल ॥ रंग० ॥ जान लगाने अजानवें ॥ रंग० ॥ किउं न करो त्रिया

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

सु कंचन देहा ॥ हरीहर ब्रह्म पुरंदरा, तुज आगें केहा ॥अजीत०॥२॥ तुंही अगोचर को नहीं, सज्जन गुन रेहा ॥ चाहे ताकुं चाहियें, धरी धर्म सनेहा ॥ अजित० ॥ ३ ॥ भक्ति वछल जग तारनो, तुं बिरुद वदेहा ॥ वीतराग हुए वालहा ॥ क्युं कर्म री ठेहा ॥ अजित० ॥ ४ ॥ जे जिनवर हे भरतमें, एरावत विदेहा ॥ जस कहे तुज पद प्रणमतें, सब प्रणमे तेहा ॥ अजित० ॥ ५ ॥

॥ पद चुमालीशमुं ॥

॥ राग गोडी ॥ संभव जिन जब नयन मिल्यो हो ॥ टेक ॥ प्रगटे पूरव पुण्यके अंकुर, तबतें दिन मोहि सफल वल्यो हो ॥ संभव० ॥ १ ॥ अंगनमें अमियें मेह वूठे, जन्म तापको व्याप गल्यो हो ॥ जेसी भक्ति तेसी प्रभु करुना, श्वेत संखमें दुध मिल्यो हो ॥ संभव० ॥ २ ॥ दरस फिरत हे दुरदी दीसतें, मोह मल्ल जिणे जगत्रय छल्यो हो ॥ समकित रतन लेहु दरिसणतें. अब न जाऊं कुगति रल्यो हो ॥ संभव० ॥ ३ ॥ नेह नजर भर निरखतही मुज, प्रभुसुं हियडो हेज हल्यो

पर पर परखतहि जया, जैसा हीरा जाचाहो ॥ ओर देव सवि परहस्या, में जाणी काचाहो ॥ सुमति० ॥ ॥ १ ॥ तेसी किरिया हे खरी, जैसी तुज वाचाहो ॥ ओर देव सवि मोहें चस्या, सवि मिथ्या माचाहो ॥ सुमति० ॥ २ ॥ चउरासी लखवेषमां, हुं बहु पर नाचाहो ॥ मुगति दान देइ साहिबा, अब करहो ऊंचाहो ॥ सुमति० ॥ ३ ॥ लागी अग्नि कषायकी, सब ठोरही आचाहो ॥ रक्षक जाणी आदस्या, में तुम शरन माचाहो ॥ सुमति० ॥ ४ ॥ पक्षपात नहिं कोउसुं, नहिं लालच लांचाहो ॥ श्रीनयविजय सुशिष्यको, तोसुं दिल राचाहो ॥ सुमति० ॥५॥ इति ॥

॥ पद सुडतालीशमुं ॥

॥ राग पूरवी ॥ घरि घरि सांजरे सांइ सलूना, घरि घरि० ॥ टेक ॥ पद्म प्रभु जिन दिलसें न विसरे, मानु कियो कछु गुनको टूना ॥ दरसन देखतही सुख पाउं, तो बिन होतहुं उना भूना ॥ घरि० ॥ १ ॥ प्रभुगुन ज्ञान ध्यान विधि रचना, पान सुपारी काथा चूना ॥ राग जयो दिलमें आयोगें, रहे छिपाया छाना छूना ॥ घरि० ॥ २ ॥ प्रभुगुन

चित्त बांध्यो सब साथे, कुन पेसें लेइ घर सूना ॥ राग जग्या प्रभुसुं मोहि परगट, कहो नया कोऊ कहो जूना ॥ घरि० ॥ ३ ॥ लोक लाजसें जो चित चोरे, सोतो सहज विवेकही सूना ॥ प्रभुगुन ध्यान विगर भ्रम भूला, करे किरिया सो राने रूना ॥ घरि० ॥ ४ ॥ मेंतो नेह कियो तोहि साथे, अब निवाह तोतो वह दूना ॥ जस कहे तो बिन ओर न सेवुं, अमिय खाइ कुन चाखे लूना ॥ घरि० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद अडतालीशमुं ॥

॥ राग इमन कल्याण ॥ ऐसे सामी सुपार्श्वसें दिल लगा, दुःखभगा सुख जगा जगतारणा ॥ राजहंसकुं मानसरोवर, रेवा जल ज्युं वारणा ॥ ऐसें० ॥ १ ॥ टेक ॥ मोरकुं मेह चकोरकुं चंदा, मधु मनमथ चित्त ठारना ॥ फूल अमूल भमरकी अंबही, कोकिलकुं सुखकारना ॥ ऐसें० ॥ २ ॥ सीताकुं राम काम ज्युं रतिकुं, पंथीकुं घर बारना ॥ दानीकुं त्याग याग ब्रह्मनकुं, योगीकुं संयम धारना ॥ ऐसें० ॥ ३ ॥ नंदनवन ज्युं सुरकुं वल्लभ, न्यायीकुं न्याय निहारना ॥ त्युं मेरे मन तुंहि सुहायो, ओर

तो चितर्ते उतारनां ॥ ऐसे० ॥४॥ श्रीसुपार्श्व दरिश-
न पर तेरे, कीजें कोमी उवारना ॥ श्री नय विजय विबु-
ध सेवककुं, दियो समता रस पारना॥ऐसे०॥५॥ इति॥

॥ पद ओगणपचाशमुं ॥

॥ राग रामग्री ॥ श्रीचंद्रप्रज्ञ जिनराज राजे,
वदन पूनमचंदरे ॥ जविक लोक चकोर निरखत,
लहे परमानंदरे ॥ श्रीचंद्र० ॥ १ ॥ टेक ॥ महमहे
महिमाएं जसजर, सरस जस अरविंदरे ॥ रण
कणे कविजन जमर रशिया, लहि सुख मकरंदरे
॥ श्री चंद्र०॥ २ ॥ जस नामे दोलत अधिक दिये,
टले दोहग दंदरे ॥ जस गुन कथा जव व्यथा जां-
जे, ध्यान शिवतरु कंदरे ॥ श्री चंद्र० ॥ ३ ॥ विपुल
हृदय विशाल जुजयुग, चलित चाल गयंदरे ॥ अ-
तुल अतिशय महिमा मंदिर, प्रणत सुरनर वृंदरे॥
श्री चंद्र० ॥ ४ ॥ में दास चाकर प्रज्ञु तेरो, शीष्य
तुज फरजंदरे ॥ जसविजय वाचक इम विनवे, टालो
मुज जव फंदरे ॥ श्री चंद्र० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद पचाशमुं ॥

॥ राग केदारो ॥ में कीनो नहीं तो विन ओर

सुं राग ॥ टेक ॥ दिनदिन मान चढे गुन तेरो, ज्युं कंचन परजाग ॥ ओरनमें है कषायकी कलिका, सो क्युं सेवा लाग ॥ में कीनो०॥१॥ राजहंस तुं मानसरोवर, ओर अशुचि रुचि काग ॥ विषय भुजंगम गरुम तुं कहियें, ओर विषय विषनाग ॥ में कीनो० ॥ २ ॥ ओर देव जल छीलर सरिखे, तुं तो समुद्र अथाग ॥ तुं सुरतरु जग वंछित पूरन, ओर तो सुको साग ॥ में कीनो० ॥ ३ ॥ तु पुरुषोत्तम तुंहि निरंजन, तुं शंकर वडजाग ॥ तुं ब्रह्मा तुं बुद्धि महाबल, तुंहि देव वीतराग ॥ में कीनो० ॥४॥ सुविधिनाथ तुज गुन फूलनको, मेरो दिल है बाग ॥ जस कहे जमर रसिक होइ तामें, लीजें जक्ति पराग ॥ में कीनो० ॥ ५ ॥

॥ पद एकावनमुं ॥

॥ राग फागनी देशी ॥ चल कसाय पाताल कल श जिहां, तृष्णा पवन प्रचंम ॥ बहु विकल्प कल्लोल चढतुहे, आरति फेन उदंड ॥ १ ॥ जवसायर जीषण तारीयें हो, अहो मेरे ललना ॥ पासजी त्रिजुवन नाथ दिलमें, ए विनति धारियें हो ॥ अ० ॥

॥ २ ॥ जरत उदाम काम वडवानल, परत सैल गिरी शृंग ॥ फिरत व्यसन बहु मगर तिमिंगल, करतहे निमग उमंग ॥ अ० ॥ ३ ॥ भमरी पाके पिच भयंकर, उलटी गुलटी वाच ॥ करत प्रमाद पिशाच सहित जिहां, अविरति व्यंतरी नाच ॥ अ० ॥ ४ ॥ गर्जत अरति फुरति रति विजुरी, होत बहोत तोफान ॥ लागतियोरकुं गुरु मलवारी, धरम जिहाज निदान ॥ अ० ॥ ५ ॥ जुरई पाटे प जिउ अनि जोरी, सहस अढार शीलंग ॥ धरम जिहाज तिउ सज करी चलवो, जस कहे शिव-पुर चंग ॥ अ० ॥ ६ ॥

॥ पद बावनमुं ॥

॥दुख टलियां मुख दीठे हो मुज सुख उपनां रे, नेख्यो नेख्यो वीर जिणंदरे ॥ हवे मुज मनमंदिर-मां प्रभु आवी वस्यो रे, प. हुं पामुं परमानंद रे ॥दु०॥ ॥१॥ पीठ बंध इहां कीधो समकीत वजनो रे, काढ्यो काढ्यो कचरो ने भ्रांति रे ॥ इहां अति उंचा सोहे पा-रिख गंडुया रे, रूडी रूडी संवर जांति रे ॥ दु० ॥ ॥ २ ॥ कर्म विवर गोख इहां मोति झुमखा रे, झुबे

॥ २ ॥ जरत उदाम काम वडवानल, परत सेह गिरी शृंग ॥ फिरत व्यसन बहु मगर तिमिंगल करतहे निमग उमंग ॥ अ० ॥ ३ ॥ नमरी याके विच नयंकर, उलटी गुलटी वाच ॥ करत प्रमाद पिशाच सहित जिहां, अविरति व्यंतरी नाच ॥ अ० ॥ ४ ॥ गर्जत अरति फुरति रति विजुरी, होत बहोत तोफान ॥ लागतियोरकुं गुरु मलवारी, धरम जिहाज निदान ॥ अ० ॥ ५ ॥ जुरई पाटे ए जिउ अति जोरी, सहस अढार शीलंग ॥ धरम जिहाज तिउ सज करी चलवो, जस कहे शिवपुर चंग ॥ अ० ॥ ६ ॥

॥ पद बावनमुं ॥

॥डुख टलियां मुख दीठे हो मुज सुख उपनोरे, नेट्यो नेट्यो वीर जिणंदरे ॥ हवे मुज मनमंदिरमां प्रभु आवी वसोरे, पाउं पामुं परमानंदरे ॥डु० ॥ ॥१॥ पीठ बंध इहां कीधो समकीत वज्रनोरे, काढ्यो काढ्यो कचरो नें भ्रांतिरे ॥ इहां अति उंचा सोहे चारित्र चंडुआरे, रूडी रूडी संवर नांतिरे ॥ डु० ॥ ॥ २ ॥ कर्म विवर गोखे इहा मोति जुमकारे, जुबे

जुवे धीगुण श्रावरे ॥ पार भावना पंचाली अचरय करेरे, कोरी कोरी कोरणी काढरे ॥ डु० ॥ ३ ॥ इहां श्रावी समता राणीसुं प्रजु रमोरे, सारि सारि थिरता सेजरे ॥ किम जइ शकशो एकवार जो श्रावशोरे, रंज्या रंज्या हियमानी हेजरे ॥ डु० ॥ ४ ॥ वयज श्ररज सुनी प्रजु मनमंदिर श्रावियारे, श्रापे तुग तुग त्रिजुवन जाणरे ॥ श्री नयविजय विबुध पय सेवक जणेरे, तेणे पाम्या पाम्या कोमि कल्याणरे ॥ डु० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद त्रेपनसुं ॥

॥ सज्जन राखत रीति जली, विनु कारन उपकारी उत्तम, जाइ सहज मिलि ॥ डुर्जानकी मन परिनति काली, जैसी होय गली ॥ स० ॥ १ ॥ श्रोरनको देखत गुन जगमें, डुर्जान जाये जली ॥ फल पावे गुन गुनको ज्ञाता, सज्जन हेज हली ॥ स० ॥ ॥ २ ॥ ऊंच इति पद वेगे डुर्जान, जाइ नांहिं वली ॥ उपगह उपर वेठी मीनी, होत नहिं उजली ॥ स० ॥ ३ ॥ विनय विवेक विचारत सज्जन, जड कजाव जली ॥ दोप लेश जो देखे कबहुं, चाखे

चतुर टली ॥ स० ॥ ४ ॥ अब में ऐसो सज्ञान पायो, उनकी रीत चली ॥ श्रीनयविजय सुगुरु सेवातें, सुख रस रंग रली ॥ स० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद चोपनमुं ॥

॥ आज आनंद जयो, प्रजुको दर्शन लह्यो, रोम रोम सितल जयो, प्रजु चित्त आयो हे ॥ आ०॥ मन हुंते धास्या तोड़े, चलके आयो मन मोड़े, चरण कमल तेरो, मनमें ठहरायो हे ॥ आ० ॥ १ ॥ अकल अरूपी तुंही, अकल अमूरति योंही, निरख निरख तेरो, सुमतिशुं मिलायो हे ॥ आ०॥२॥ सुमति स्वरूप तेरो, रंग जयो एक अनेरो, वाइ रंग आत्म प्रदेशी, सुजस रंगायो हे ॥ आ० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद पंचावनमुं ॥

॥ ज्ञानादिक गुण तेरो, अनंत अपर अनेरो ॥ वाही कीरत सुन मेरो, चित्तहुं जस गायो हे ॥ ज्ञान० ॥ १ ॥ तेरो ग्यान तेरो ध्यान, तेरो नाम मेरो प्रान, कारण कारज सिद्धो, ध्याताध्येय ठहरायो हे ॥ ज्ञा० ॥ २ ॥ छूट गयो भ्रम मेरो, दर्शन पायो में तेरो ॥ चरण कमल तेरो, सुजस रंगायो हे॥ज्ञा०॥३॥

॥ पद छप्पनमुं ॥

॥ वाद वादीसर ताजे, गुरु मेरो गछ राजे, पंच महाव्रत जहाज, सुधर्मा ज्युं सवायो हे ॥ वा० ॥ ॥ १ ॥ विध्याको वडो प्रतापसंग, जल ज्युं उगत तुरंग, निरमल जेसो संग, समुद्र कहायो हे ॥ वा० ॥ २ ॥ सचसमुद्र जर्‍यो, धरम पोत तामे तर्‍यो, शील सुखान वाधम, क्षमालंगर नाख्यो हे ॥ वा० ॥ ३ ॥ सद्दृम संतोष करी, तपतो तपी ह्या ज-री, ध्यान रंजक देत धरी, गोला ग्यान चलायो हे ॥ वा० ॥ ४ ॥ एसो जहाज क्रियाकाज, मुनिराज सजो साज, दया मया मणि माणिक, ताहिमें जरा-यो हे ॥ वा० ॥ ५ ॥ पुण्य पवन आयो, सुजस ज-हाज चलायो, प्राणजीवन एसो माल, घर बेठे पा-यो हे ॥ वा० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ पद सत्तावनमुं ॥

॥ एरी आज आनंद जयो मेरे तेरो, मुख निरख निरख रोम रोम शीतल जयो अंगोअंग ॥ ए० ॥ सुद्ध समजत समता रस जीलत, आनंद रंग ज-यो अनंतरंग ॥ ए० ॥ १ ॥ एसी आनंद दशा प्र-

गटी चित्त, अंतर ताको प्रजाव चलत, निरमल गंगवाही गंग॥समता दोउ मिल रहे, जस विजय जीलत ताके संग ॥ ए० ॥ २ ॥

॥ पद अठावनमुं ॥

॥ जो जो देखे वीतरागने, सो सो होशे वीरा रे ॥ विन देखे होसे नहीं कोइ, कांइ होए अधीरा रे ॥ जो० ॥ १ ॥ समय एक धनहीं घटसी, जो सुख डुःखकी पीमारे ॥ तुं क्युं सोच करे मन कूमा, होवे वज्र जो हीरारे ॥ जो० ॥ २ ॥ लगे न तीर कमान चान क्युं, मारी सके नही मिरारे॥ तुं संजार पुरुष वल अपनो, सुख अनंत तो पीरारे ॥ जो० ॥ ३ ॥ नयन ध्यान धरो वा प्रजुको, जो टारे नव जीरारे ॥ सजसचेतन धरम निज अपनो, जो तारे नव तीरारे ॥ जो० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद ओगणसाठमुं ॥

॥ नजन विनुं जीवित जेसे प्रेत, मलिन मंदमति डोलत घर घर, उदर नरनके हेत ॥ न० ॥ १ ॥ डुर्मुख वचन वकत नित निंदा, सज्जन सकल डुःख देत ॥ कबहुं पापको पावत पैसो, गाढे धुरीमे देत॥

ए० ॥ १ ॥ ता सुख मद्दवेकुं मुनि मन खोजत, मन मंजन कर ध्यायो ॥ मनमंजरी जइ, प्रफुल्लीत द-सा लइ, तापर भमर लोभायो ॥ ए० ॥२॥ भमर अनुभव भयो, प्रभुगुन वास लह्यो ॥ चरन करन तेरो, अलख लखायो ॥ एसी दशा होत जब, परम पुरुष तब, पकरत पास पठायो ॥ ए० ॥ ३ ॥ तब सुजस भयो, अंतरंग आनंद लह्यो, रोम रोम सीतल भयो, परमातम पायो ॥ अकल सरूप भूप, कोऊ न परखत कूप, सुजस प्रभु चित आयो ॥ ए० ॥ ४ ॥

॥ पद चालमठमुं ॥

॥ राग ध्रुपद ॥ केसे देत कर्मनकुं दोस, मन निवहे वेहे आपु कानो ॥ ग्रहे राग अरु दोष ॥ के० ॥ विषयके रस आप भूलो, पाप सो तन पोस ॥के०॥१॥ देवधर्म गुरुकी करी निंदा, मिथ्यामतके जोस ॥ के० ॥ २ ॥ फल उदय भइ नरक पदवी, नजोगे येको संग ॥ के० ॥३॥ किए आपुं कर्म भुगतें, अब कहा करो सोस ॥के०॥४॥ दुःख नो बहु काल बीत्यो, लहे न सुख जल ओस० ॥ के० ॥ ५ ॥ क्रोध मान माया लोभ, भर्यो तन घट पोस ॥ के० ॥ ६ ॥ चेत चेतन

ाय सुजस, मुगति पंथसो पोस ॥ के० ॥ ३ इति ॥

॥ पद त्रेसठमुं ॥

॥ राग गोडी सारंग ॥ तुह्मारे शिर राजत अ-जब जटा, गारये मानुं गयख न गारत ॥ सीस स-णगार वटा ॥ तुह्मारे० ॥ १ ॥ किधुं गंगा अमरीस सुर सेवत, यमुना उजय तटा ॥ गिरिवर सिखरें पद अनोपम, उन्नत मेघ घटा ॥ तु० ॥ २ ॥ केसे वाल लगे जवि चवजल, तारत अति विकटा ॥ ह-रि कहे जस प्रजु रुषज रखो ए, हमहिं अति उ-घटा ॥ तु० ॥ ३ ॥

॥ पद चोसठमुं ॥

॥ राग विहाग ॥ माया कारमीरे, माया म करो चतुर सुजाण ॥ माया वायो जगत वसुधो, दुःखीयो थाय अजान ॥ जे नर मायायें मोहि रह्यो, तेने सु-पनें नही सुख गाम ॥ माया० ॥ १ ॥ न्हाना मोटा नरखी माया, नारीने अधकेरी ॥ वली विशेषें अधिकी माया, गरढाने जाजेरी ॥माया०॥२॥ माया कामण माया मोहन, माया जग धूतारी ॥ मायार्थी मन सहुनुं चलीयुं, लोजीने बहु प्यारी ॥ माया० ॥

ठोके, दीयो वंछित सेवक करठके ॥ सा० ॥ अखय खजानो तुज नवी खूटे, हाथा थकी तो सुं नवी छूटे ॥ सा० ॥ ३ ॥ जो खिजमतमां खामी दाखो, तो पण निज जाणी हित राखो ॥ सा० ॥ जेणे दीधुं छे तेहज देशे, सेवा करशे ते फल लेशे ॥ सा० ॥ ४ ॥ धेनु कूप आराम सवावे, देतां देतां संपत्ती पावे ॥ सा० ॥ तिम मुजने तमो जो गुण देशो, तो जगमां जस अधिक वहेशो ॥ सा० ॥ ५ ॥ अधिकुं ओछुं किशुं रे कहावो, जिमतिम सेवक चित्त मनावो ॥ सा० ॥ माग्या विण तो माय न पिरसे, ए उखाणो साचो दिसे ॥ सा० ॥ ६ ॥ इम जाणीने विनती कीजें, मोहनगारा मुजरो लीजें ॥ सा० ॥ वाचक जस कहे खमियें आसंगो, दियो शिव सुख धरी अविहड रंगो ॥ सा० ॥ ७ ॥ इति

॥ पद सडसठमुं ॥

॥ राग आशावरी ॥ चेतन मोहको संग निवारो, ग्यान सुधारस धारो ॥ चे० ॥ १ ॥ मोह महातम मल दूरेरे, धरे सुमति परकास ॥ मुक्ति पंथ परगट करेरे, दीपक ज्ञान विलास ॥ चे० ॥ २ ॥ ज्ञानी ज्ञान म-

गन रहेरे, रागादिक मल खोय ॥ चित्त उदास करनी करेरे, कर्मबंध नहिं होय ॥चे०॥३॥ हीन जयो व्यवहारमें रे, युक्ति न उपजे कोय ॥ दीन जयो प्रजु पद जपेरे, मुगति कहांसुं होय ॥ चे० ॥ ४ ॥ प्रजु समरो पूजो पढोरे, करो वीविध व्यवहार ॥ मोक्ष स्वरूपी आतमारे, ग्यान गमन निरधार ॥ चे० ॥ ॥ ५ ॥ ज्ञान कला घट घट वसेरे, जोग जुगतिके पार ॥ निज निज कला उद्योत करेरे, मुगति होय संसार ॥ चे० ॥ ६ ॥ बहु विध क्रिया कलेसशुं रे, शिव पद न लहे कोय ॥ ग्यान कला परगाससों रे, सहज मोक्ष पद होय ॥ चे० ॥ ७ ॥ अनुजव चिंतामणि रतनरे, जाके हृदए परकास ॥ सो पुनीत शिव पद लहेरे, दहे चतुर्गनिवास ॥ चे० ॥ ८ ॥ महिमा सम्यक् ग्यानकीरे, अरुचि राग बल जोय ॥ क्रिया करत फल जुजतेरे, कर्म बंध नहिं होय ॥चे०॥ ९॥ जेद ग्यान तबलों जलोरे, जबलों मुक्ति न होय ॥ परम जोति परगट जिहांरे, तिहां विकल्प नहिं कोय ॥ चे० ॥ १० ॥ जेद ग्यान साबू जयोरे, समरस निर्मल नीर ॥ धोबी अंतर आतमारे, धोवे निज गुण चीर ॥ चे० ॥ ११ ॥ राग विरोध विमोह मलीरे, ए-

ही आश्रव मूल ॥ एही करम वढायकेंरे, करे धर्मकी जूल ॥ चे०॥ १२ ॥ ग्यान सरूपी आतमारे, करे ग्यान नहिं ओर ॥ द्रव्यकर्म चेतन करे रे, एह व्यवहारकी दोर ॥ चे० ॥ १३ ॥ करतां परणामी द्रव्य रे, कर्मरूप परिणाम॥ किरिया परजयकी फिरतरे, वस्तु एकत्रय नाम ॥ चे०॥ १४ ॥ करता कर्म क्रिया करेरे, क्रिया करम करतार ॥ नाम जेद वहुविध नयेरे, वस्तु एक निर्धार ॥ चे० ॥ १५ ॥ एक कर्म कर्तव्यतारे, करे न करता दोय ॥ तेसें जस सत्ता सधिरे, एक जावको होय ॥ चे० ॥ १६ ॥ इति ॥

॥ पद अडसठमुं ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ जवलग उपसमनांहिं रति, तव लगे जोग धरे क्युं होवे, नाम धरावे जति ॥ जव० ॥ १ ॥ कपट करे तुं वहु विध जातें, क्रोधे जले ठति ॥ ताको फल तुं क्या पावेगो, ग्यान विना नांहिं वती ॥ जव० ॥ २ ॥ जूख तरस ओर धूप सहतु है, कहे तु महा व्रति ॥ कपट केलवे माया मंडे, मनमें धरे व्यकती ॥ जव० ॥ ३ ॥ जस्म लगावत ठाढो रहेवत, कहत हे हुं वसति ॥ जंत्र मंत्र जमी

छूटी भेखज, लोभवश मूढ मति ॥ जय० ॥ ४ ॥ पढे पढे पढु पूर्वधारी, जिनमें सक्ति हृति ॥ सोभी उपसम भोगी वीचारे, पाये नरक गति ॥ जय० ॥ ५ ॥ कोउ गृहस्थ कोउ होवे वैरागी, जोगी जगत जति ॥ अध्यात्म भावें उदासी रहेगो, पावेगो तबही मुगति ॥ जय० ॥ ६ ॥ श्री नय विजय विबुध वर राजे, जाने जग कीरति ॥ श्री जसविजय उवझाय पसायें, हेम प्रभु सुख संतति ॥ जय० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ पद अगणोतेरमुं ॥

॥ राग रामग्री ॥ चंद्रप्रभु जिनराज राजे, वदन पूनम चंदरे ॥ भविक लोक चकोर निरखत, लहे परमानंदरे ॥ चं० ॥ १ ॥ महमहे महिमायें जमर, रस जस अरविंदरे ॥ रणझणे भविजन भ्रमर रसिया, लहि सुख मकरंद रे ॥ चं० ॥ २ ॥ जस नामें दोलत अधिक दीपे, टले दोहग दंदरे ॥ जसगुण कथा भवव्यथा भांजें, ध्यान शिवतरु कंद रे ॥ चं० ॥ ॥ ३ ॥ विपुल हृदय विशाल भुजयुग, चलत चाल गयंदरे ॥ अतुल अतिसय महिमा मंदिर, प्रणत सुर नर वृंदरे ॥ चं० ॥ ४ ॥ हुं दास चाकर देव तोरो,

सिस तुज फरजंदरे ॥ जसविजय वाचक एम वि-
नवे, टाल मुज जव फंद रे ॥ चंद्र० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद सित्तेरमुं ॥

॥ राग काफी ॥ तो विना ओर न जाचुं जिनंदराय ॥ तो० ॥ टेक ॥ में मेरो मन निश्चय किनो, एहमां कछु नहिं काचुं ॥ जिनंदराय ॥ तो० ॥ १ ॥ तम चरन कमलपर पंकज मन मेरो, अनुजव रस जर चाखुं ॥ अंतरंग अमृत रस चाखो, एह वचन मन साचुं ॥ जी० ॥ तो० ॥ २ ॥ जस प्रजु ध्यायो महारस पायो, अवर रसें नहिं राचुं ॥ अंतरंग फरस्यो दरसन तेरो, तुज गुण रस रंग माचुं ॥ जी० ॥ तो० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद इकोतेरमुं ॥

॥ राग प्रजाती ॥ दृष्टि रागें नवि लागियें, वली जागियें चित्तें ॥ मागियें शिख ज्ञानी तणी, हृद जांगीएं नित्यें ॥ दृष्टि० ॥ १ ॥ जे जना दोष देखे नहिं, जिहां जिहां अति रागी ॥ दोष अछता पण दाखवे, जिहांथी रुचि जांगी ॥ दृ० ॥ २ ॥ दृष्टि राग चले चित्तथी, फरे नेत्र विकरालें ॥ पूर्व उप-

कार न सांजले, पडे अधिक जंजाले ॥ द० ॥ ३ ॥ वीर जिन जब हुता विचरता, तव मंखली पुत्तो ॥ जिन करी जड जनें आदस्यो, इहां मोह अति धूत्तो ॥ द० ॥ ४ ॥ ऋद्धि जंडार रमणी तजी, जजी आप मति रागो ॥ दृष्टि रागें जमाली लह्यो, नवि जवजल तागो ॥ द० ॥ ५ ॥ वली आचार्य सावद्य जे, हुओ अनंत संसारो ॥ दृष्टि राग स्वमति पणे थयो, महानिशीथ विचारो ॥ द० ॥ ६ ॥ हुवे जिन धर्म आशातना, अजाण्युं कहे रंगें ॥ मंकु आगलें जिनवरें, वंदियो जगवइ अंगें ॥ द० ॥ ७ ॥ मामना नटने मूर्खनो, मिल्यो जेहवो जोगो ॥ दृष्टिराग मिल्यो तेहवो, कथक सेवक लोगो ॥ द० ॥ ॥ ८ ॥ आपण गोठडी मीठमी, हवीने मन लागे ॥ ज्ञानी गुरु वचन रलियामणां, कटुक तीरस्यां वागे ॥ द० ॥ ९ ॥ दृष्टिरागें भ्रम उपजे, वधे ज्ञान गुण रागें ॥ एहमां एक तुमें आदरो, जलो होय जे आगें ॥ द० ॥ १० ॥ दृष्टि रागी कदा मत हुवो, सदा सुगुरु अनुसरजो ॥ वाचक जसविजय कहे, हित शिख मन धरजो ॥ द० ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ पद बहोंतेरमुं ॥

॥ राग गोडी ॥ जब लगें समता क्षणु नाहि आवे, जबलगें क्रोध व्यापक हे अंतर, तबलगें जोग न सोहावे ॥ ज० ॥ १ ॥ बाह्य क्रिया करे कपट केलवे, फिरके महंत कहावे ॥ पक्षपात कबहु नहिं छोडे, उनकुं कुगति बोलावे ॥ जब० ॥ २ ॥ जिन जोगीने क्रोध किहांतें, उनकुं सुगुरु बतावे ॥ नाम धारक जिन्न जिन्न बतावें ॥ उपसम विनु दुःख पावे ॥ ज० ॥ ३ ॥ क्रोध करी खंधक आचारज, हुओ अग्निकुमार ॥ दंडकी नृपनो देश प्रजाल्यो, जमियो जव मोकार ॥ ज० ॥ ४ ॥ संब प्रद्युम्न कुमार संताप्यो, कष्ट दीपायन पाय ॥ क्रोध करी तपनो फल हार्यो, कीधो द्वारका दाय ॥ ज० ॥ ५ ॥ काउस्सग्गमां चढ्यो अति क्रोध, प्रसन्न चंद्र रुषिराय ॥ सातमी नरक तणां दल मेली, कडवां ते न खमाय ॥ ज० ॥ ६ ॥ पार्श्वनाथने उपसर्ग कीधो, कमठ जवंतर धीठ ॥ नरक तिर्यंचनां दुःख पामी, क्रोध तणां फल दीठ ॥ ज० ॥ ७ ॥ एम अनेक साधु पूर्वधर, तपिया तप करी जेह ॥ कारज पमे पण ते नवि

टकिया, क्रोध तणुं बल एह ॥ ज० ॥ ८ ॥ समता भाव वली जे मुनि वरिया, तेहनो धन्य अवतार ॥ खंधक शूपिनी खाल उतारी, उपसमें उतार्यो पार ॥ ज० ॥ ए ॥ चंडरुद्र आचारज चलतां, मस्तक दीया प्रहार ॥ समता करतां केवल पाम्यो, नव-दीक्षित अणगार ॥ ज०॥ १० ॥ सागरचंदनुं शीश प्रजाल्युं, नीसजसेन नरेंद्र ॥ सुमता भाव धरी सुरलोकें, पोतो परम आनंद ॥ ज० ॥ ११ ॥ खेमा करतां खरच न लागे, भांगे कोड कलेस ॥ अरिहंत देव आराधक थाये, वाधे सुजस प्रवेश ॥ ज० ॥ १२ ॥ इति ॥

॥ पद तहोंतेरमुं ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ प्रभु मेरे तुं सब वातें पूरा, परकी आश कहा करे प्रीतम, ए किण वातें अधूरा ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ परवश वसत लहत परतक्ष दुःख, सबही बातें सनूरा ॥ निजघर आप संभार संपदा, मत मन होय सनूरा ॥प्रभु०॥२॥ परसंग त्याग लाग निजरंगें, आनंद वेली अंकूरा ॥ निज अनुभवरस लागे मीठा, ज्युं घेवर में बूरा ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥ अपने ख्याल पलकमें खेले, करे शत्रुका चूरा ॥ सहजानंद

अचल सुख पावे, घूरे जगजस नूरा ॥ प्रजु० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद चम्मोतेरमुं ॥

॥ अथ श्री पूजाविधिनुं पार्श्व जिन स्तवन ॥
॥ शालिजद्र जोगी रह्यो ॥ ए देशी ॥

पूजाविध मांहे जावियेंजी, अंतरंग जे जाव ॥ ते सवि तुऊ आगल कहुंजी, साहेब सरल सजाव ॥ सुहंकर अवधारो प्रजुपास ॥ ए आंकणी ॥ दातण करतां जाविएंजी, प्रजुगुण जल मुख सुद्ध ॥ जल उतारी प्रमत्तताजी, हो मुऊ निर्मल वुद्ध ॥ सु० ॥ ॥ २ ॥ जतनायें स्नानें करीजी, काढो मेल मिथ्यात ॥ अंगुठो अंग शोषवीजी, जाणो हुं अवदात ॥ सु० ॥ ३ ॥ क्षीरोदकनां धोतियांजी, चिंतवो चित्त संतोष ॥ अष्टकर्म संवर नलोजी, आठपडो मुहकोश ॥ सु० ॥ ४ ॥ ओरशीयो एकाग्रताजी, केसर न- क्ति कल्लोल ॥ श्रद्धा चंदन चिंतवोजी, ध्यान घोल रंग रोल ॥ सु० ॥ ५ ॥ नाल वहुं आणा नलीजी, तिलकतणो तेह जाव ॥ जे आजरण उतारीयेंजी, ते उतारो निज जाव ॥ सु० ॥ ६ ॥ जे निर्माल उतारियेंजी, ते तो चित्त उपाध ...

सेह पुरुप धन धन ॥ सु० ॥ १६ ॥ परम पुरुष सामलाजी, मानो ए मुज सेव ॥ दूर करो जव लोजी, वाचक जस कहे देव ॥ सु० ॥ १७ ॥ इति ॥

॥ पद पंचोतेरसुं ॥

॥ राग गोडी ॥ संजव जिन नयन मि- प्रगटे पुण्यके अंकूर ॥ ए आंकणी ॥ तबथें दिन ही सफल वल्यो हे ॥ अंगणे अमीयें मेह वुग जनम तापको व्याप गल्यो हे ॥ संज० ॥ १ ॥ जै सी जक्ति तैसी प्रजु करुना, स्वेत संखमें दूध मि ल्यो हे ॥ दर्शनथें नवनिधि रिधि पाइ, फुःख दोहग सब दूर टल्यो हे ॥ संज० ॥ २ ॥ फरत फिरत हे दूरहिं दिलथें, मोहमल्ल जिणे जगत्र जल्यो हे। समकित रत्न लहुं दरिसनसें, अब नवि जाउं कुगति रल्यो हे ॥ संज० ॥ ३ ॥ नेह नजर जर निरखन हीं मुज, प्रजुसुं हैयडो हेज हल्यो हे ॥ श्री जय विबुध सेवककुं, साहेब सुरतरु होय फल्यो हे। ॥ संज० ॥ ४ ॥ इति ॥

मकरो जोर ॥ जिउ० ॥ ४ ॥ रतन तीन दीजें राजुलकुं, जयो रंगरस फकड़ी जोर ॥ विनय सदा सेवहु सुखदाइ, समुदराउ शिवा देवी किसोर ॥ जिउ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद दशमुं ॥

॥ राग जेजेवंती ॥ अजहुं कहालों प्यारे, रहोगे हमसुं न्यारे, वाहितो धुतारि प्यारि, तुम चित्त जाइ हे ॥ १ ॥ वहुत विगोइ खोइ, इनही सकल गुन॥ लोगनमें शोभा तुम, जलि युं वढाइ हे ॥ २ ॥ हमकुं काहेकुं मानो, वाहिसो तिहारो तानो ॥ जानोगे आपहि वातो, जैसी डुःखदाइ हे ॥ ३ ॥ सबनकुं प्यारी नारी, माया हे जगतदारी ॥ इनसेंतें यारी जारी, आखर बुराइ हे ॥ ४ ॥ जूठेहि दिखावे नेह, पाथरकी जैसी त्रेह ॥ ठटकी दाखेंगी ठेह, अंत तो पराइ हे ॥ ५ ॥ कहे ज्ञान कला जिउ, जानो सो करहो पिउ, जैसी हे तैसी तो तुम, विनये सुनाइ हे ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ पद अगीआरसुं ॥

राग विहागडो ॥ सांइ सलूनाकेसें पाऊरी, मन

धाउरे, मेरी गति समजों नांहिं ॥ केतेही ठोरे में प्यासे, केते उर गहे बांहि ॥ थिर० ॥ ३ ॥ सयन सनेह सकल हे चंचल, किसके सुत किसकी माइ॥ रितु वसंत शिर रूख पात ज्यों, जाय परोगे को कांही ॥ थिर० ॥ ४ ॥ अजरामर अकलंक अरूपी, सब लोगनकुं सुखदाइ ॥ विनय कहे जब दुःख बंधनतें, छोडनहार वे सांइ ॥ थिर० ॥ ५ ॥

॥ पद तेरमुं ॥

॥ राग विहागडो ॥ मन न काहुके वश, मन कीए सबवश, मनकी सो गति जाने, याको मन वश हे ॥ १ ॥ पढोहो बहुत पाठ, तप करो जे पाहार, मन वश कीए विनु, तप जप वशहे ॥२॥ काहेकुं फीरे हे मन, काहु न पावेगो चेन, विषयके उमंग रंग, कहु न फुरसहे ॥ ३ ॥ सोउ ज्ञानी सोउ ध्यानी, सोउ मेरे जीया यानी ॥ जिने मन वशकियो, वाहिको सुजश हे ॥४॥ विनय कहे सौ धनु, याको मनु छिनु छिनु, सांइ सांइ सांइ सांइ, सांइसें तिरस हे॥५॥इति

॥ पद चौदमुं ॥

॥ राग श्रीराग ॥ अजब तमासा इक जाख्या ॥

नमें मूंझी रह्यो मेरे लाल, इन विधि गया अनंता काल ॥ अब सुद्दनेका छोडो ख्याल, या सब झूठा मिथ्या जाल ॥ जागो० ॥ ३ ॥ या अपावन माया सेज, उसपर पिउका इतना हेज ॥ सुकलध्यान पखारो अंग, युं प्रगटे तुम निर्मल रंग ॥ जागो० ॥ ४ ॥ पिउ निरखो जिनराउ दिनंद, कहे मति नारी मिटे युं निंद ॥ आप संभालो खोली नेत, विनयकरी विनवो पिउ चेत ॥ जागो० ॥ ५ ॥

॥ पद शोलमुं ॥

॥ राग ॥ हुसेनी ॥ खुदाके बंदे बे सीर मत ल्यो बज गारी ॥ एदेशी ॥ सुन सुहागिन वे दिलकी बात हमारी ॥ टेक ॥ में सोदागर दूर विदेशी, सोदाकरने आया ॥ देखत तोकुं झूलिगया सब, तोहिसुं चित्त लाया ॥ सुन० ॥ १ ॥ निसी वासर तेरे रस राता, अपने काम न बूझे ॥ तेरे विरह दरदतें डरपूं, क्युं दुस्मनसें झूझे ॥ सुन० ॥ २ ॥ सुंदरी तें कछु कामन कीया, तुज बिनु पलक न जावे ॥ लोचन लागी रहे तेरी लालच, उंर कछु न सोहावे ॥ सुन० ॥ ३ ॥ अरथ गरथ सब तुजे खिलाया, दमरा ए-

विनती इतनी मानी वालिम, बेपरवाही मत करे ॥ ४ ॥ तुं परदेशका वेलाल, पंथी प्राहुणा, प्रीत में बांधी वेलाल, क्युं रहुं तो विना ॥ तुं विना क्युं करी, रहुं दुःख जरी, सती युं संगें चहुं ॥ सांइका करी विनय सज्ञान, युं अजेदें तुज मिलुं ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद अढारमुं ॥

॥ राग आशावरी ॥ कहा करुं मंदिर कहा करुं दमरा, न जानुं कहां तुं उड बेठेगा जमरा ॥ जोरी जोरी गए गोरी दुमाला, उड गए पंखी पड रहा माला ॥ कहा० ॥ १ ॥ टेक ॥ पवनकी गठरी केसें ठराउ, घर न वसत आय बेठे बटाउ ॥ अगनी बुकानी कादेकी कारा, दीप दीप नव केसें उजारा ॥ कहा० ॥ २ ॥ चित्रके नरुवर कबहुं न मोरे, माटिका घोरा केतेक दोरे ॥ धुंएकी हेरी नृरका थंना, उहां खेल दंमा देखो अचंना ॥ कहा० ॥ ३ ॥ फिरि फिरि आवन जान क्रमामा, सांपके नागेका केसा विश्वासा ॥ या दुनियांकी जूठी हे यारी, जेंमी ब-॥२ बाजीगर बारी ॥ कहा० ॥ ४ ॥ परमातम अविचल अविनासी, सोहे गुरु परम पद वासी ॥ वि-

ए अंत होयगा न्यारा ॥ घोरा० ॥ १ ॥ चरे चीज अरुझरे केदसुं, उवट चले अटारा ॥ जीन करे तब सोया चाहे, खानेकुं हुशिआरा ॥ घोरा० ॥ २ ॥ खूब खजीना खरच खिलावों, यो सब न्यामत चारा ॥ असवारीका अवसर होवे, तब गलिया होवे गमारा ॥ घोरा० ॥ ३ ॥ विनु ताता विनु प्यासा होवे, खिजमत (बहुत) करावनहारा ॥ दूर दोर जंगलमें मारे, क्रूरे धनी विचारा ॥ घोरा० ॥ ४ ॥ कर होचोकमा चातुर चोकस, यो चावक दोयचारा ॥ इन घोरेकुं विनय सिखाउं, युं पावो जव पारा ॥ घोरा० ॥ ५ ॥

॥ पद एकवीशमुं ॥

॥ राग आशावरी ॥ पांचो घोरे एक रथ जूता, साहिब जसका नितर सूता ॥ खेडु जसका मद मनवारा, घोरेकुं दोरावनहारा ॥ पांचो० ॥ १ ॥ टेक ॥ घोरे जूवे और और चाहे, रथकुं फिरि फिरि उवट वाहे ॥ विषम पंथ चिहुं उर अंधियारा, तोनि न जागे साहिब प्यारा ॥ पांचो० ॥ २ ॥ खेडु रथकुं दूर दोरावे, बेखबर साहिब दुःख पावे ॥ रथ जंगलमां जाय असुके, साहिब सोया कबुअ न

दिशाकी खमकी खोलो, (तो) वाजे अनहद तूरा ॥ साधु० ॥ ३ ॥ पंचचूनका जरम मिटाया, वहे मांहिं समाया ॥ विनय प्रभुसुं ज्योत मिलि जब, फिर संसार न आया ॥ साधु० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद छवीशमुं ॥

॥ राग गोडी ॥ शांति तेरे लोचन हे अनियारे ॥ शां० ॥ टेक ॥ कमल ज्यों सुंदर मीन ज्यों चंचल, मधुकरथी अति कारे ॥ शां० ॥ १ ॥ जाकी मनोहरता जीत वनमें, फिरते हरिन विचारे ॥ चतुर चकोर परानव निरखत, वपरे चुनत अंगारे ॥ शां० ॥ ॥ २ ॥ उपशम रसके अजव चकोरे, मानो विरंची संवारे ॥ कीर्त्ति विजय वाचक को विनयी, मोकों हे अति प्यारे ॥ शां० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद सत्तावीशमुं ॥

॥ राग गोडी ॥ तोलों वेर वेर फिर आवेंगें, जीऊ जीवन मेरे प्यारे पीयुकी, जो जो सोज न पावेंगे ॥ तोलों० ॥१॥ विहर दिवानी फिरुं हुं ढुंढती, सेज न साज सुहावेंगे ॥ रूपरंग जोबन मेरी सहि-

चोरासी सहस सत्ता, णवह अधिक वीश ॥ लोक प्रासाद जिन ए, नमियें नामी शीश ॥मे०॥ ५ ॥ पंचवर्ण उदार मणिमय, सत्त हस्त प्रमाण ॥ केइ धनु सय पंच परिमित, एजिन मूरति जाण ॥ मे० ॥ ६ ॥ इंद्रादिक सुर सयल पूजे, करे समकित शुद्ध ॥ केसर चंदन अगर पूजा, रचे नाव विशुद्ध ॥ मे० ॥ ७ ॥ घणा सुरवर लहियें जिनपद, पूजतां ए जिन चार ॥ ध्यान धरतां एह प्रजुनुं, लहियें नवनो पार ॥ मे० ॥ ८ ॥ श्री कीर्त्ति विजय उवझाय केरो, लहे ए पुण्य पसाय ॥ सासता जिन थुणियें एणीपर, विनय विजय उवझाय ॥ मे० ॥ए॥ इति॥

॥ पद ओगणत्रीशमुं ॥

॥ राग नूपाल ॥ श्री विमलाचल मंमन आदिजिना, प्रह उठी वंदो एक मनां ॥ माता मरुदेवा नंदना, नावें दीठो नयन आनंदना ॥ वि० ॥ १ ॥ रवि उदयो जग पंकजवना, विकसत वूटा नां ॥होवे निंदित जो निज लोचनां, आतम हित मन आलोचना ॥वि०॥२॥ चंचल ए तन धन जोवनां, जो मरण आवे जिन जीवनां ॥ जाड सफल करोरे जी-

तोड़े सब, ब्रह्म ग्यानकी सेरी ॥ माया मोह दल, ग्यान कला गति घेरी ॥ हो० ॥ ४ ॥ विनय स्वरूप संजारो अपनो, कुमेति दूर उखेरी ॥ आपहीं आपसों आप विचारो, मुगति जइ अब मेरी ॥ ॥ हो० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद बत्रीशमुं ॥

॥ राग रामकली ॥ अब क्युं न होत उदासी, हो आतम ॥ अब क्युं न० ॥ ए आंकणी ॥ उलट पलट घट घेरी रही हे, क्युं तुम आशा दासी ॥ हो० ॥ ॥ १ ॥ निसि वासर उनसुं तुम खेलो, होत खलक मां हांसी ॥ गेरो विषम विषयकी आशा, ज्युं निकसें जव फांसी ॥ हो० ॥ २ ॥ पूरण जइ न कवहीं किसकी, कुरमति देत विसासी ॥ जो गेरी नहीं सोचत इनकी, तो कहा जये सन्यासी ॥ हो० ॥ ३ ॥ रूठरही सुमति पटराणी, देखो हृदय विमासी ॥ मुऊ रहेहो क्या मायामें, अंते गेरी तुम जासी ॥ हो० ॥ ४ ॥ आश करो एक विनय विचारी, अविचल पद अविनासी ॥ आशा पूरण एक परमेसर, सेवो शिवरपुरवासी ॥ हो० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद चोत्रीशमुं ॥

॥ बाबा हम विचार करलागे, हम विचार करलागे ॥ बा० ॥ टेक ॥ मनमें चिंता रहि न कोउ, दुःखजरम जोजागे ॥ बा० ॥ १ ॥ गुरुका शब्द तीर तरकसमें, करे कमान विचारी ॥ साचे सो रन समसेर हमारे, तो ग्यान घोडे असवारी ॥ बा० ॥ ॥ २ ॥ गोरव काज वसीला कीया, चेहेरे नाम लिखाया ॥ सत्य काज संतोष लगामी, तेजीका चाबक लाया ॥ बा० ॥ ३ ॥ प्रेम प्रीत बिच जाम न दीना, तुरत बरात लखाइ ॥ नाम खजाना जगत अलुफा, तो खुब चाकरी पाइ ॥ बा० ॥ ४ ॥ हांसल दाम खरच कछु नांहीं, तागीर करे न कोइ ॥ विनयकुं दरसन उमदी खिजमत, जाग्य विना न होइ ॥ बा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद पांत्रीशमुं ॥

॥ आदित्त आदि जिन ध्यायो, चरणारविंद उदायो ॥ चल उदयो प्रभु मुख सूर ॥ आ० ॥ टेक ॥ सोम सुकित जयो, त्रिहुं लोक आनंद लह्यो ॥ प्रभु मुख देखत चंद्र शीतल भरपूर ॥ आ० ॥ १ ॥ घर

॥ पद चोत्रीशमुं ॥

॥ बाबा हम विचार करलागे, हम विचार करलागे ॥ बा० ॥ टेक ॥ मनमें चिंता रहि न कोउ, दुःखनरम नोनागे ॥ बा० ॥ १ ॥ गुरुका शब्द तीर तरकसमें, करे कमान विचारी ॥ साचे सो रन समसेर हमारे, तो ग्यान घोडे असवारी ॥ बा० ॥ ॥ २ ॥ गोरख काज वर्मीला कीया, चेहेरे नाम लिखाया ॥ सत्य काज संतोष लगामी, तेजीका चाबक लाया ॥ बा० ॥ ३ ॥ प्रेम प्रीत बिच जामन दीना, तुरत बगान लम्याइ ॥ नाम खजाना जगत अलुफा, तो खुब चाकरी पाइ ॥ बा० ॥ ४ ॥ हांसल दाम खरच कछु नांही, नागीर करे न कोइ ॥ विनयकुं दरसन उमदी खिजमत, नाग्य विना न होइ ॥ बा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद पांत्रीशमुं ॥

॥ आदिन आदि जिन ध्यायो, चरणारविंद उदायो ॥ चल उदयो प्रभु मुख सूर ॥ आ० ॥ टेक॥ सोम सुक्ति नयो, त्रिहुं लोक आनंद लह्यो ॥ प्रभु मुख देखन चंद्र शीतल भरपूर ॥ आ० ॥१॥ घर

होइ बैठी, शंभु घर भवानी ॥ ब्रह्माघर सावित्रि हो-
इ बैठी, इंद्र घर इंद्राणी ॥ माया० ॥ २ ॥ पंडितकु
पोथी होइ बैठी, तीरथीनाकु पानी ॥ योगी घर
भभूत होइ बैठी, राजाके घर रानी ॥ माया० ॥ ३ ॥
किने माया हीरो करलीनो, किने मट्टी कोरी जानी ॥
कहत विनय सुनो सब लोको, उनके हाथ बिका-
नी ॥ माया० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ इति श्रीजशविलास तथा श्रीविनयविलास संपूर्ण. ॥

साहिब नाम संभारो ॥ जो० ॥ टेक ॥ सुतां सुतां रयनविहानी, अब तुम नींद निवारो ॥ मंगलकारि अमृत वेला, थिरचित्त काज सुधारो ॥ जो० ॥ ॥ १ ॥ खिनभर जो तुं याद करेगो, सुख नीपजेगो सारो ॥ वेला वीत्यां है पछतावो, क्युं कर काज सुधारो ॥ जो० ॥ २ ॥ घरव्यापारें दिवश वितायो, राते निंद गमायो ॥ इन वेला निधि चारित्र आदर, ज्ञानानंद रमायो ॥ जो० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद त्रीजुं ॥

॥ राग भैरव ॥ मेरे तो मुनि वीतराग, चित्त मांहे जोई ॥ मेरे० ॥ टेक ॥ और देव नाम रूप, दूसरो न कोई ॥ मेरे० ॥ १ ॥ साधनके संघ खेल खेल, जाति पांत खोई ॥ अबतो बात फेल गइ, जाने सब कोई ॥ मेरे० ॥ २ ॥ घाति करम भसम गण, देहमें लगाई ॥ परमयोग शुद्धभाव, खायक चित्त लाई ॥ मेरे० ॥ ३ ॥ तंबूतो गगन जाव, भूमि शयन जाई ॥ चारित नवनिधि सरूप, ज्ञानानंद भाई ॥ मेरे० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद छट्ठु ॥

॥ राग वेलावल ॥ साहिब वास पहिचानियें
जानो तेहनो जाव ॥ वह्न जान्या विन ए तनु, पा
हन सम गाव ॥ साहिब० ॥ १ ॥ ज्ञाने ग्येयकी ए
कता, ध्याने ध्येय समाय ॥ निज अनुजव घट जो
इयें, कहावें स्यो रमाय ॥ साहिब० ॥ २ ॥ वेद पुरानमें
कतु नहीं, नहीं कतु वाको सहिनान ॥ इगं निधि चारि
त रूपमय, ज्ञानानंद सुजान ॥ साहिब० ॥ ३ ॥ इति

॥ पद सातमुं ॥

॥ राग वेलावल ॥ या नगरीमें क्युं कर रहनां, रा
जा लूंट करे सो सहना ॥ या० ॥ टेक ॥ नहीं न्या
पार इहां कोइ चाले, नही कोइ घरमांहें गहना ।
या० ॥ १ ॥ तसकर पण निज दाव विचारे, जेव
निहाले फिर फिर रहना ॥ नारी पांच शीपाइ सायें
रमण करे नित कुणसें कहना ॥ या० ॥ २ ॥ अंजलि
जल जिम खरची खूटे, आखर इग दिन होगा पर
ना ॥ यातें नवनिधि चारित संयुत, इग ज्ञानानंद
होगा सरना ॥ या० ॥ ३ ॥ इति ॥

हांसें आया ॥ वेटा वेटी कवन हे, किसकी यह माया ॥ प्यारे० ॥ १ ॥ आवनो जावनो एकलो, कुण संग रहाया ॥ पंथक होयकर जालमें, केसें लपट्यो भाया ॥ प्यारे० ॥ २ ॥ नीसर जावो फंदसें, इग छिनमें जाया ॥ जो निधि चारित आदरे, ज्ञानानंद रमाया ॥ प्यारे० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद अगीआरसुं ॥

॥ राग आशावरी ॥ अवधू सुता क्यां इस मठमें ॥ अ० ॥ टेक ॥ इस मठका हे कवन जरोसा, पम जावे चटपटमें ॥ अ० ॥ छिनमें ताता छिनमे शीतल, रोग शोग बहु मठमें ॥ अ० ॥ १ ॥ पानी किनारे मठका वासा, कवन विश्वास ए तटमें ॥ अ० ॥ सूता सूता काल गमायो, अजहुं न जाग्यो तुं घटमें ॥ अ० ॥ २ ॥ घरटी फेरी आटो खायो, खरची न बांधी वटमें ॥ अ० ॥ इतनी सुनी निधि चारित्र मिलकर, ज्ञानानंद आए घटमें ॥ अ० ॥ ३ ॥

॥ पद वारसुं ॥

॥ राग आशावरी ॥ विनजारा तें खेप जरी जारी ॥ वि० ॥ टेक ॥ चारदेसावर खेप करी तम, लाज

खह्यो बहु नारी ॥ वि० ॥ फिरतां फिरतां नयो तुं नायक, राखी नाम संचारी ॥ वि० ॥ १ ॥ सहस ला-ख करोमां उपर, नाम फलायो सारी ॥ वि० ॥ बेटा पोतरा बहु घर कीना, जगमें संपत्त सारी ॥ वि० ॥ ॥ २ ॥ खूटी खरची खदगयो डेरो, पमगयो टांको न्हारी ॥ वि० ॥ विन खरचीसें कवन संचारे, टांडे-की नई खवारी ॥ वि० ॥ ३ ॥ पहेले देखी पग जो राखे, निधि चारित्त तुं धारी ॥ वि० ॥ ज्ञानानंद पद आदरतो, खरची होती सारी ॥ वि० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद तेरमुं ॥

॥ राग आशावरी ॥ योगी तेरा सूना मंदिर क्युं ॥ योगी० ॥ टेक ॥ बहु महेनतकर मंदिर चुनियो, अब नहीं वसना क्युं ॥ योगी० ॥ १ ॥ नीरथजल-कर पहने धोया. जोग सुरजि दग्ध क्युं ॥ योगी० ॥ भसमभूत ए मंदिर उपर. धाम लगाया क्युं ॥ योगी० ॥ २ ॥ रामनाम एक ध्यानमें योगी, धूनी ज्युं-की त्युं ॥ योगी० ॥ एह विचार करी नाइ नाथा, नवनिधि चारित त्युं ॥ योगी० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद चौदमुं ॥

॥ राग आशावरी ॥ अवधू वह जोगी हम माने, जो हमकुं सवगत जाने ॥ अ० ॥ ब्रह्मा विष्णु महेसर हमही, हमकुं इसर माने ॥ अ० ॥ १ ॥ चक्री यख वासुदेव जे हमहीं, सबजग हमकुं जाने ॥ अ० ॥ हमसें न्यारा नहिं कोइ जगमें, जग परमित हम माने ॥ अ० ॥ २ ॥ अजरामर अकलंकता हमहीं, शिववासी जे माने ॥ अ० ॥ निधि चारित ज्ञानानंद जोगी, चिद्घन नाम जे माने ॥ अ० ॥३॥ इति ॥

॥ पद पंदरमुं ॥

॥ राग आशावरी ॥ साधो जाइ नहिं मिलियो हम मीता ॥ सा० ॥ टेक ॥ मीता खातर घर घर जटकी, पायो नहिं परतीना ॥ सा० ॥ जहां जाउं ताहां अपनी अपनी, मन पग्व चांले रीता ॥ सा० ॥ ॥१॥ संसय करुं नो कहे किनाउा, यह्न न रूसे नीता ॥ सा० ॥ इन ठनमें अधविचमें नूली, कैसें कर दिन प ॥ सा० ॥ २ ॥ आगम देग्वन जग नवि देखुं ॥ रान्वग्र जग्र पग रीना ॥सा०॥ तिनधी दूव अम ॥ वि० ॥ रित युन, इग ज्ञानानंद मीता ॥ सा० ॥३॥

॥ पद चौदमुं ॥

॥ राग आशावरी ॥ अवधू वह जोगी हम माने, जो हमकुं सवगत जाने ॥ अ० ॥ ब्रह्मा विष्णु महेसर हमही, हमकुं इसर माने ॥ अ० ॥ १ ॥ चक्री बल वासुदेव जे हमहीं, सबजग हमकुं जाने ॥ अ० ॥ हमसें न्यारा नहिं कोइ जगमें, जग परमित हम माने ॥ अ० ॥ २ ॥ अजरामर अकर्त्तकता हमहीं, शिववासी जे माने ॥ अ० ॥ निधि चारित ज्ञानानंद जोगी, चिद्घन नाम जे माने ॥ अ० ॥३॥ इति ॥

॥ पद पंदरमुं ॥

॥ राग आशावरी ॥ साधो जाइ नहिं मिलियो हम मीता ॥ सा० ॥ टेक ॥ मीता खातर घर घर भटकी, पायो नहिं परतीता ॥ सा० ॥ जहां जाउं ताहां अपनी अपनी, मत पख जांखे रीता ॥ सा० ॥ ॥१॥ संसय करुं नो कहे छिनाला, बहुजन रूसे नीता ॥ सा० ॥ इत उतसें अधविचमें जूली, कैसे कर दिन [illegible] ॥ सा० ॥ २ ॥ आगम देखत जग नवि देखुं, [illegible]रीन्चख जख पग रीता ॥सा०॥ तिनथी हव अम [illegible] उ० ॥ रित युत, इग ज्ञानानंद मीता ॥ सा० ॥३॥

अप्रतिबंध आगति गति जासा ॥ बा० ॥ ३ ॥ कोइ संघयण जाके नहिं पावे, नहिं कोइ संठाण निरासा ॥ जां देखे तां एकही साहिब, जग नज प्रमितहे जसु वासा ॥ बा० ॥ ४ ॥ सो साहब तुं अपना मठमें, निरखो थिर चित्त ध्यान सुवासा ॥ चारित ज्ञानानंद निधि आदर, ज्योतिरूप निज भाव विकासा ॥ बा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद वीशमुं ॥

॥ राग रामकली ॥ जान न बामन काजी साधो, साहबकी गति है गी न्यारी ॥ जा० ॥ टेक ॥ उतपाद व्यय दरव परयायें, एक अनेक इणहे सुन सारी ॥ सा० ॥ १ ॥ थिरता एक समय गत जाने, उतपाद व्यय पण ध्रुव सारी ॥ अस्ति नास्ति नास्ति अस्तिकहे, आगम मांहे द्रव्य विचारी ॥सा०॥२॥ ऐसी बात हम कबहु न जानी, किनही सुरत सुन नांहि संभारी ॥ परम नयन कर नहिं हम निरखी, अनुपम स्यादवाद गुण भारी ॥ सा० ॥ ३ ॥ षट निक्षेपें मान नये कर, माने जग सामाधि संसारी ॥ निधि चारित्र ज्ञानानंद अनुभव,

तुजसम नहिं कोइ एहवो करेरी ॥ मीठो बोली हिरिदय पेसे, लाभ करे बहु भांत परेरी ॥ दू० ॥ ॥ २ ॥ सागरमें तुं था इव तावे, पाछे गोतो देय टरेरी ॥ तुज कुटिलाका कवन भरोसा, बोलतही तुं घात करेरी ॥ दू० ॥ ३ ॥ इहां सेती तुं दूर परीजा, इहां थारी मति नांह लहेरी ॥ चारित ज्ञानानंद रखवालो, श्रम प्यारी मोरे पास रहेरी ॥ दू० ॥ ४ ॥

॥ पद त्रेवीशमुं ॥

॥ राग टोडी ॥ तूंही पिया मन गमनो मिल्योरी, ठेर ठोर मन नांहिं मिल्योरी ॥ तूं० ॥ टेक ॥ हुं तोसुं कछु नहिं चाहुं, केवल अंगें रमन करोरी ॥ तूं०॥१॥ केवल तनमय एकत भावो, मोसुं प्रेमें प्रीति करोरी ॥ आठ दृष्टि सखि आनम साथें, वात करो तम सुख बचरोरी ॥ तूं० ॥ २ ॥ मनुवो सुनकर घरनी धानी, पास वसारे प्रीत करेरी ॥ चारित ज्ञानानंद सहायें, वालो धीरज चित्त धरेरी ॥ तूं० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद चोवीशमुं ॥

॥ राग टोडी ॥ प्यारे तम चउगान लरोरी, शांति खरूग तम तेग करोरी ॥ प्या० ॥ टेक ॥ धरम

ध्यान धारणवासी ॥ प्राणायाम समाधि सुरंगी, भूलोत्तर सुविलासी ॥ मे० ॥ २ ॥ रेचकपूरक कुंभक भेदं, यादर मन वशकारी ॥ चरम रंभ मध्यगेहँ पूरी, अनहद नाद विचारी ॥ मे० ॥ ३ ॥ यादर योग युगति सहु थिरता, आनम ध्यान विलासी ॥ पांचवरण पण तत्व सुदर्शी, परमातम गत जामी ॥ मे० ॥ ४ ॥ परमातम अनुसारे करतां, निज सहु जात विकासी ॥ चारित्र ज्ञानानंद सन्यासी, जाने तिण निजवासी ॥ मे० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद बत्रीशमुं ॥

॥ राग आशावरी फाग ॥ कर्म विचार करो जाइ साधु, दिव्य विचारें मन आराधो ॥ क० ॥ टेक ॥ जो परथम मिरूगति अनुतविर्य, संसृति विण कहां सिद्ध होय साधो ॥ क० ॥ १ ॥ संसृति चउगति भेद कहावे, तीन भेद तीग वेद सुजानो ॥ नारक तिरि जो परथम कहियां, निरजर नर विनते कर्म मानो ॥ क० ॥ २ ॥ चउगति परथम जेह यथार्थ, नरनारी रूप पहिंस [illegible] पहिंस कु- [illegible] य कहियें, इग विना इग [illegible] ३ ॥

निरखो न्यारी ॥ दांडी पांच चलावे जाकुं, पतवारी इग हे सुखकारी ॥ अ० ॥ १ ॥ चउदिसि चित्रित पाट पटंवर, भीतर साहव सुता सारी ॥ चउदिसि तेन तरंड फिरतहे, वालो साहव गांफल भारी ॥ अ० ॥ २ ॥ शैल सुनत उठ वेठे साहव, भाज गए जिहां तसकर सारी ॥ चारित ज्ञानानंद संचारी, आनंद हरख लहे हुशिआरी ॥ अ० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद उंगणत्रीशमुं ॥

॥ राग आशावरी ॥ राम राम सब जगहि माने, राम रामको रूप न जाने ॥ रा० ॥ टेक ॥ कवण राम कुण नगरी वासो, कहांसें आयो किहां जयो वासो ॥ रा० ॥ १ ॥ राम राम सहु जगमें व्यापी, राम विना हे कैसे आलापी ॥ राम विनाहे जंगल वासा, पाछे कोइ जाकी न करे आसा ॥रा०॥२॥ रामहि राजा रामहि राणी, राम रामहि हैरोतानि ॥ रटन करतहे कवन रामको, कैसो रूप वतावो वाको ॥ रा० ॥ ३ ॥ जे केइ वाको रूप वतावे, तेहिज साचो मुज मन भावे ॥ सो निधि चारित ज्ञानानंदें, जाने आपनो राम आनंदें ॥ रा० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद त्रीशमुं ॥

॥ राग आशावरी ॥ योगसमाधि योग आधारो, आगममांहें तत्त्व विचारो ॥ यो० ॥ टेक ॥ ज्ञानतपरके ग्वार कीनारे. अनुपम एक नगर सुखकारो ॥ यो० ॥ १ ॥ जामें जीव अनंत रहाहे, कुण समरथ ते गिणनो मानो ॥ सादि अनंता आयु जेहनो, बहुविध परिगस रिद्धि वखानो ॥ यो० ॥ २ ॥ ऊंचनीच जिहां भेद नहीं हे, सब जन नृपति जाव निहालो ॥ चारित्र ज्ञानानंद संभालो. जिम पामो पुरिवास विशालो ॥ यो० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद एकत्रीशमुं ॥

॥ राग तुमरी ॥ मंदिर एक बनाया हमने ॥ मंदिर० ॥ टेक ॥ जिस मंदिरके दश दरवाजे, एक बुंदकी मायारे ॥ नानो पंखी जाके अंतर, राज करे चित्त लाया रे ॥ मं० ॥ १ ॥ हाड मांस जाके नहिं दीसे, रूपरंग नहिं जायारे ॥ पंख न दीसे कहसें पिछानुं, पटरस चाग जायारे ॥ मं० ॥ २ ॥ जातो आतो नहिं कोइ देखे. नहिं कोइ रूप बनावेरे ॥ सब जग खायो तो पण भूखो, तृप्ति कबहिं न पा-

वेरे ॥ मं० ॥ ३ ॥ जालम पंखी तालम मंदिर, पाठे कोन बतावेरे ॥ वह पंखीको जो कोइ जाने, सो ज्ञानानंद निधि पावेरे ॥ मं० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद बत्रीशमुं ॥

॥ राग तुमरी ॥ इतना काम करे जे जोगी, सोइ योग न जानेरे ॥ इ० ॥ टेक ॥ मूंड मूंडाया भस्म लगाया, जोगी ना हम जानेरे ॥ चक्कर पहेरी रण कुं जीतें, सो योगी हम जानेरे ॥ इत० ॥ १ ॥ राजा वसकर पांचों जीते, दुर्धर द्रोयने मारेरे ॥ चार काटके सोल पिछाके, सोइ योग सुधारेरे ॥ इत० ॥ ॥ २ ॥ जाएन चावें सरव समय रहे, परमचारित्र कहावेरे ॥ ज्ञानानंद लहेर मनवाछा, सो योगी मन भावेरे ॥ इत० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद तेत्रीशमुं ॥

॥ राग तुमरी ॥ वादिनकुं नहिं जाना जबतक, कैसा ध्यान लगाया रे ॥ वा० ॥ टेक ॥ जटा वधारी भस्म लगाइ, गंगा तीर रहायारे ॥ उरध बाहु आतापना लेइ, योगी नाम धरायारे ॥ वा० ॥ १ ॥ चार वेद ध्वनि सूत धारकर, बामण नाम कहायारे ॥

हुं हरानी, तूं मत रीस चढावेरे ॥ हुं० ॥ १ ॥ एतला काल नपुंसक जानी, मंदिरमांह रहावे रे॥ सघलाइ मानसने तूं ठेले, एहि अचंभो आवे रे॥ हुं० ॥ २ ॥ आसपास ना अमने देखी, कुटिल भाव जनावे रे ॥ वल्लभ सांभल मोकुं ठांके, मोरी हुरमत जावे रे ॥ हुं० ॥ ३ ॥ तूं तो निरलज भयो मतवालो, थारी कवन चलावे रे ॥ अम वल्लभ ज्ञानानंदसाथें, अंगोअंग मिलावे रे ॥हुं०॥४॥ इति॥

॥ पद छत्रीशमुं ॥

॥ राग वसंत ॥ योगी यासें चित्त रमायो, याकी भगति करत हुं ॥ यो० ॥ टेक ॥ मेरो तो योगी बालो भोलो, बरमचारी मन भायो ॥यो०॥ जो यह देखे सोइ लोभावे, मतवालो जग भायो ॥ यो०॥ १॥ योगी खातर घर घर भटकी, यह योगी अब पायो ॥ यो० ॥ अमनें वल्लभ याकुं मान्यो, मेरो चित्त लोभायो ॥ यो० ॥ २ ॥ निरलोभी निकलंकी योगी, योगी योग रमायो ॥ यो०॥ निधि चारित ज्ञानानंद मूरति ॥ प्राण पियारो पायो ॥ यो० ॥ ३ ॥ इति ॥

नानंद योगी, मिलकर अंग मिलायो ॥सु०॥३॥ इति

॥ पद उंगणचालीशमुं ॥

॥ राग वसंत ॥ में कैसे रहुं सखी, पियागयो परदेशो ॥ मैं० ॥ टेक ॥ रितु वसंत फूली वनराइ, रंग सुरंगीत देशो ॥मैं०॥१॥ दूरदेश गये लालची वालम, कागल एको न आयो ॥ मैं० ॥ निर्मोही निस्नेही पिया मुज, कुण नारी लपटायो ॥ मैं० ॥ २ ॥ वसंत मासनी रात अंधारी, कैसें विरह बुजायो ॥ मैं० ॥ इतने निधि चारित पुत वल्लज, ज्ञानानंद घर आयो ॥ मैं० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद चालीशमुं ॥

॥ राग वसंत ॥ मेरे पियाकी निशानी, मोरे हाथ न आवे ॥ मे० ॥ टेक ॥ रूपी कहुं तो रूप न दीसे, कैसें करी वतलावे ॥ मे० ॥ १ ॥ जोति सरूपी तेह विचारुं, करमबंध कैसें जावे ॥ मे० ॥ सिद्ध सनातन उपजन विनसन, कैसें विचार सुहावे ॥ मे० ॥ २ ॥ वेद पुरानमें नहिं कहि दीसे, किणपर भाव रमावे ॥ मे० ॥ यातें चारित ज्ञानानंदी, एकहिं रूप कहावे ॥ मे० ॥ ३ ॥ इति ॥

फिरतां थाराहि मानस, अंगुलीयां दिखलावे
पि० ॥ ३ ॥ तिनतें तूं मगरूरी छांडी, जग सम समता
लावे ॥ तो नवनिध चारित्र सहायें, ज्ञानानंद पद
पावे ॥ पि० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद तेतालीशमुं ॥

॥ राग सारंग ॥ विन वालम कहो कुण गति
माहरी, वालम हीं गति नारी ॥ वि० ॥ टेक ॥ सुनो
सखी तुम वेग मनावो, सइयां लावो निहारी ॥
विन० ॥१॥ चांदनी राते मकरध्वज शर, आयलग्यो
दुःखकारी ॥ विरहव्यथायें अमने खिनजर, सुख
नहिं पामे सारी ॥ विन० ॥ २ ॥ जलविन मछली
सम टलवलती, विरहजाल जइ जारी ॥ इतने ज्ञा-
नानंद वालम आए, चारित संग सुखकारी ॥ वि० ॥३॥

॥ पद चुमालीशमुं ॥

॥ राग सारंग ॥ सेठ वेठे सारंग महलमें ॥ से० ॥
टेक ॥ सेठानी मोह नरपति वेटी, वेटा चार अनो-
पमें ॥ से० ॥ मिथ्या मकरध्वज जसु भाई, व्यापारें
गणि कोपमें ॥से०॥१॥ उंची हाट विठात विछाइ,
सुप करे नवरंगमें ॥ से० ॥ कनक रतननां भूखन



निसि रंगमें ॥ सा० ॥ १ ॥ जिम जिम जोगे म तिम बाधे, क्युं जटके मति चंगमें ॥ मृगमद गंधें मृग सम जटके, घट अनुजव नहिं रंगमें ॥ सा० ॥ २ ॥ निर्मल गंगानीर जे लाधो, खारी कुप पीवे बाटमें ॥ तिनतें निजघर चारित संयुत, जोवो ग्यानमें ॥ सा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद तेंतालीशमुं ॥

॥ राग कहेरवा ॥ सइयां मुज गेंदा मंगायदे, गेंदाकी ल्याइ दे बहार ॥ ए चाल ॥ यार मोह नारी मिलायदे, यारोंका याही हे मिलाप ॥ या० ॥ टेक ॥ रूपवंत मोह नारी मिलायदे, उत्तम कुल गुण धाप ॥ या० ॥ १ ॥ पद्मिनी नारी मुज जटकायो, परघर रमवा लाग ॥ या० ॥ ते मुज दूलापण कहलायो, जग जन कहेते निलाज ॥ या० ॥ २ ॥ सुकुलीनी मोहे नारी मिले जो, तो थाय चित्त सुख प्राय ॥ या० ॥ इतनी सुनकर नायक मंत्री, सुमतिनो मेलन कराय ॥ या० ॥ ३ ॥ घरनी संगें हरख धरीने, अंग रहे लपटाय ॥ या० ॥ चारित्र आदर ज्ञानानंदे, नवनिधि सहज सहाय ॥ या० ॥ ४ ॥

अब हम हाथ, ढील न करो प्यारी चलो हम —थ ॥ मे० ॥ तम खातर अम दुःख बहु कीन, प्यारी मत ठांडे अमने दीन ॥ मे० ॥ २ ॥ नारी कहे परो जारे निगोद, थारे मारे कुण करे वात निखोद ॥ मे० ॥ अम अब चालुं किहां थारे संग धूत, तुं मूरख शिर मोल कुमूत ॥ मे० ॥ ३ ॥ इतनी सुनकर जयो ते उदास, कुटिला अबलानी कुण करे आस ॥ मे० ॥ तिन अवसर लही निधि चारित्त, ज्ञानानंद मूरति जजे सुख चित्त ॥ मे० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद उंगणपचाशमुं ॥

॥ राग कहेरवा ॥ एक अचंजो मुज मन वशियो ॥ ए० ॥ टेक ॥ चालतो हालतो डूंगर दीठो, विचमें एक सिखर उंचो वसियो ॥ ए० ॥ १ ॥ छोटा पांच शिखर जसुं चउदिशि, नाना तरु विण मंडित रहियो ॥ ए० ॥ सरव काल सागर विच रहितो, कवन चलावे ते अम कहियो ॥ ए० ॥ २ ॥ मानस नहिं कोइ तेहमां दिसे, ध्रुव अध्रुवपणो तेहमें रहियो ॥ ए० ॥ डुंगर विच नवनिधि चारित्र युत, ज्ञानानंद मूरति गुण गहियो ॥ ए० ॥ ३ ॥ इति ॥

मन राखो रहे ना ॥ वा० ॥ १ ॥ नारी कालीनागन सरिखी, देखत चित्त झामाझोल करे रे ॥ वा० ॥ नारीसंयोगें वरमदत्त परमुख, नरकें डुरधर डुःक्क चरे रे ॥ वा० ॥ २ ॥ आर्डकुमर मुनि नारि संयोगें, वरस चउवीस गिहिवास कियो रे ॥ वा० ॥ नारीकी प्रीतें इनजव परजव, सुख न लहे पगवंध जयो रे ॥वा०॥३॥ उत्तम नर इन नाहिं वतावे, ध्यान धरे वनमांह रहे रे ॥ वा० ॥ निरमल निजगुन आतम ध्याने, सुरू समाधि जाव लहे रे ॥ वा० ॥४॥ तिनतें वालम तम पण समजो, कुटिलानी प्रीतकी परिहरो रे ॥ वा० ॥ मोसुं तो निधि चारित्र आदर, ज्ञानानंद सुख रमण करो रे ॥ वा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद बावनमुं ॥

॥ राग सोरठ ॥ देश माहरो पियाकुं वताय दिजो रे, मेंतो लेउंगी जोगनियाको वेस ॥ दे० ॥ ए चाल ॥ कोइ सखी पियाकुं वतावे री, मेंतो जाउंगी वालम पास ॥ को० ॥ टेक ॥ सारी जग्या पूठीयो, वालमजीको देश ॥ कोइको साच नहिं लह्यो, जो कागल पहुंतें देश ॥ को० ॥ १ ॥ ज्ञानी ज्ञानी सब कहे,

गावाज, प्यारी तूं वक्रि दगावाज ॥ टेक ॥ तेरे खातर मूंगर दरि विच, रही दुःख सह्यो में अपार ॥ हांसी खुसी बहु नातरां कीधां, तूं कांइ जूलि गवार ॥ रे तूं वक्रि० ॥ १ ॥ कवडी साटे तेरे खातर, माहरो किधो मोख ॥ ढूंढक योगी यति सन्यासी ॥ मुंण्डित कियो तें रोख ॥ रे तूं वक्रि० ॥ २ ॥ मुद्रको बांधी कान ते फाडी, बहुविध वेस कराय ॥ कपट करी सहु पाखंड कीधा, जन लूंट्यो मन जाय ॥ रे तूं वक्रि० ॥३॥ घर घर जटक्यो तेरे सार्थे, पोतें पाप जराय ॥ अब तूं काह न बोले मोसुं, तुं कपटीनी दिखलाय ॥ रे तूं वक्रि० ॥ ४ ॥ ऐसो देखी जयोहूं उदासी, निधि चारित्र लहाय ॥ ज्ञानानंद चेतनमय मूरति, ध्यान समाधि गहाय ॥ रे तूं वक्रि० ॥५॥ इति ॥

॥ पद उपनमुं ॥

॥ राग मल्हार ॥ प्यारे साहेबशुं चित्त लावोरे, साहेब दूर कहलावो रे ॥ प्या० ॥ टेक ॥ साहेब एकही हे जग व्यापी, नहि कहे भेद लहावे रे ॥ प्या०॥१॥ जे केइ साहेब भेद बतावे, ते बहुग जग पावे ॥ पारसनाथ कहे कोइ बरमा, विष्णु शिव कहे-

लावे रे ॥ प्या० ॥ २ ॥ ध्यान ध्येय इग पारस रूप,
ज्योतिरूप वरम जावे ॥ केवलान्वयी ज्ञानी ते विष्णु,
शिववासी शिव जावे रे ॥ प्या० ॥३॥ जोतिरूप सा-
हेब तो इगही, तिनसुं ध्यान लगावो ॥ निधि चारित्र
ज्ञानानंद मूरति, ध्यान समाधि समावोरे ॥ प्या० ॥४॥

॥ पद सत्तावनमुं ॥

॥ राग मल्हार ॥ देखो पिया आगम जहवेरी
आयो, नाना जूखन लायो ॥ दे० ॥ टेक ॥ विनय
कनकनो घाट वनायो, संयम रतन लगायो ॥ नि-
रमल ज्ञानको हीरक विचमें, दरशन मानक ला-
यो ॥ दे० ॥ १ ॥ खायक वैडूर्यनी पंगति, मोकिक
ध्यान लगायो ॥ सुमिति गुपति लीलम विद्रूम जि-
हां, शेष तत्त्व कहलायो ॥ दे० ॥ २ ॥ ए सहु जूपण
मोल अमोला, निरखत चित्त लोजायो ॥ दरपें नि-
धि चारित निहालो, ज्ञानानंद रमायो ॥ दे० ॥ ३ ॥ इति

॥ पद अठावनमुं ॥

॥ राग मल्हार ॥ ज्ञानकी दृष्टि निहालो, वाल-
म तुम अंतर दृष्टि निहालो ॥ वा० ॥ टेक ॥ वाह्य
दृष्टि देखे सो मूढा, कार्य नांहिं निहालो ॥ धरम

जाइ, निजघट अंतर जावो ॥ सा० ॥ टेक ॥ मेरा
तेरा कहा करतहे, नहिं कछु तेरा जावो ॥ सा० ॥
जग जन किरिया कहा दिखलावे, कहा जग जन
समजावो ॥ सा० ॥ १ ॥ निज निजमत पख हठ-
ता वारो, अंतर भाव विचारो ॥ सा० ॥ हालाहल
अज्ञान निवारो, ज्ञान सुधारस धारो ॥ सा० ॥ २ ॥
तत्व विचारें प्रेम लगावो, निजगुण विमल निपावो ॥
सा० ॥ नवनिधि चारित प्रेमें आदर, ज्ञानानंद र-
मावो ॥ सा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद इकोनसमं ॥

॥ राग जंगलो ॥ तुम सखि निरखोरे थाइ, सो-
तनकी लेगइ अब बालमवा ॥ तु० ॥ टेक ॥ आगें
आगें पिया चलतहे, पाछें सोतनकी थाइ ॥ दासी प-
ण ते तेहनें साथें, कुटिला चित लोभाइ ॥ तु० ॥ १ ॥
अमने सज्जन पहचो रीस, बालम गये तरमाइ ॥
मोह नृपतिके जासें अटक्यो, अब नहिं निकले थाइ
॥ तु० ॥ २ ॥ क्रोधादिक तेहने रखवाला, कोट विष-
य दु खराइ ॥ तेहने चउदिसि मान थिसतहे,
अहोनिश संपट सांइ ॥ तु० ॥ ३ ॥ दासी सुत ज

धी० ॥ ४ ॥ सुमति आगम मंत्री साथें,
कसाइ ॥ हरखें आव्यां निज घरमांहें,
कराइ ॥ धी० ॥ ५ ॥ तिन अवसर निधि
आदर, ज्ञानानंद रमाइ ॥ अनुजव प्याला प्रेम
साला, रंगें पान कराइ ॥ धी० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ पद तहोंतेरमुं ॥

॥ राग जंगलो ॥ तुम किहां चाल्यो रे सांइ,
सायें हुं योगन जइ अब ॥ तु० ॥ टेक ॥ तेरे ख
र हम घर ठांडी, थारे संग चित्त लाइ ॥ किन
हमने ठांकिके चाले, केसें प्रीत लगाइ ॥ तु० ॥
किन कारन अमने डुःख दीनो, काहे कुं घर मू
इ ॥ घात विश्वास करे कहा मोसुं, कुणने पुक
जाइ ॥ तु० ॥२॥ सांइ कहे अम घरकी याही,
पुरानी जाइ ॥ जबलग तेल दिपकमां याती, तब
ग अम तम जाइ ॥ तु० ॥ ३ ॥ इतनी कहकर स
याओ, अपने ठाम सुहाइ ॥ अनुपम नवनिधि
रित्र आदर, ज्ञानानंद रमाइ ॥ तु० ॥ ४ ॥ इति

॥ पद चम्मोतेरमुं ॥



॥ अथ ॥

॥ श्रीसंयम तरंगः प्रारभ्यते ॥

॥ पद पहेलुं ॥

॥ राग भेरव ॥ योगनंद आदरकर संतो, अरु
ध्रुति लय लावो ॥ यो० ॥ टेक ॥ अंतर पटचक्र सो
धन करकें, वंकनाल कर जावो ॥ यो० ॥ १ ॥ चंद
सूरज मारज जुग तजकर, सुषमन परवाह जानो ।
कुंभक रेचक पूरक भावें, प्रत्याहार प्रमाणो ॥ यो०
॥ २ ॥ धारण ध्यान समाधि सपतम, श्वास रोधन
करतानो ॥ अनुपम अनहद धनी अनुयोगें, सोहं
सोहं गानो ॥ यो० ॥ ३ ॥ सोहं सोहं रटना रटतां, नव
निधि संयम भायो ॥ ज्ञानानंद परमातम रोचि
देखत हरख लहायो ॥ यो० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद बीजुं ॥

॥ राग भेरव ॥ जग जन निंदडी तजकर संतो,
योग निंद संभारो ॥ ज० ॥ टेक ॥ नाना लबधि
निधानन थानक, सकल संपद आधारो ॥ ज० ॥

॥ १ ॥ द्विविध विषय देखि नवि छंडे. निर्लेपी वी-
तरागो ॥ शत्रु मित्र समभाव रहे नित, दरक्षापन
ध्यान जागो ॥ ज० ॥ २ ॥ योग निरुद्ध लय नावे नि-
मने; कोइ न करे अपगारो ॥ शीत समान रेवे ज-
सु रिपुगण, पवन फले जगसारो ॥ ज० ॥३॥ तत्तपर
आपदनो जसु नवि भय, पंचविजय घटे सारो ॥
निधिचारित्र ज्ञानानंद आदर, परमानंद निरा-
रो ॥ ज० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद त्रीजुं ॥

॥ राग भैरवी ॥ प्राणपिया नम ऐसी सयजी पी-
वोरे ॥ प्रा० ॥ टेक ॥ निज शुद्ध परिणति अनुपम
सयजी, तिंखी भरी विवेक सेवो रे ॥ प्रा० ॥ तत्त्व वि-
चार विविध सुमसाला, उपसम कंकर कुंकी मेवो
रे ॥ प्रा० ॥ १ ॥ कुटिल निवृत्ति समता प्रेमें, संयम
रगडा ताणो रे ॥ प्रा० ॥ धरम शुक्ल पय सुरत्नीस-
र केरा, संवर साफ गुगानो रे ॥ प्रा० ॥ २ ॥ अ-
नुभव ज्ञानका रतन पियाला, भर भर समता पिला-
वे रे ॥ प्रा० ॥ निधि चारित्र ज्ञानानंद योगी, पी-
यत ध्यान लगावे रे ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद चोथुं ॥

॥ राग भैरवी ॥ गगन मंडलगत परम अरुण रुचि आयो रे ॥ ग० ॥ टेक ॥ चंद कहुं तो चंद न निरखुं, तरणि पिण न जनायो रे ॥ ग० ॥ तेल सिखा विन दीप न निरखुं, जगमग रुचि सुखदायो रे ॥ ग० ॥ १ ॥ घन समीर परमुख उपाधि, रहित रुचिर दरसायो रे ॥ ग० ॥ सब जग व्यापी पांचहि जाते, पण नहिं जाव रमायो रे ॥ ग० ॥ २ ॥ पंडित योगी सघले थाके, निज हत पक्ष लपटायो रे ॥ ग० ॥ आपहिं निरखे आपहिं जाने, सहज समाधि जगायो रे ॥ ग० ॥ ३ ॥ तब घर घरकी जरमना मेटी, सहज रूप परखायो रे ॥ ग० ॥ निधि संयम ज्ञानानंद योगी, ज्योति निरख हरखायो रे ॥ ग० ॥४॥

॥ पद पांचमुं ॥

॥ राग वेलावल ॥ निज परिणति चित्त धारियें, पर परणति तज सार ॥ नि० ॥ टेक ॥ जबलग रहे पर परिणति, तबलग जब भ्रम धार ॥ नि० ॥ १ ॥ अपनी पूंजी लख नहिं, कुमता संग चित्त खोल ॥ राजपूत होय परमतें, ते कायर सममोल ॥ नि० ॥ २ ॥ किंपाक

विजाव दे सबही, अपनो न ठांड दे कबही ॥ सा० ॥ १ ॥ कोइ प्रकारें नहिं देखो, उपर बीजको लेखो ॥ रासन गंगाजल धोयो, तोपण लोटे उकडायो ॥ सा० ॥ २ ॥ सूकर पायसकुं ठंमी, अशुचि जोगें जे मंमी ॥ मधु घृतकर सींचो तबही, नींब न मीठो होय कबहीं ॥ सा० ॥ ३ ॥ ज्ञानी ध्यानी के द्रेषी, निजमत पखपातें पेखी ॥ तिनतें अनुजव ज्ञानानंदें, सुजजो चारित्र आनंदें ॥ सा० ॥ ४ ॥

॥ पद आठमुं ॥

॥ राग काफी ॥ देखो प्यारे सब जग कबही, नहिं कोइ शांति मूरत पेही ॥ दे० ॥ मुनिजन उपसम गुण धारी, कबही कोप कारण सारी ॥ दे० ॥ १ ॥ सेठकुं तसकर सहु गावे, तसकर सेठ करी लावे ॥ सतवादीकुं कहे कूमा, मिरखाकुं सत कहे मूंमा ॥ दे० ॥ २ ॥ कमल प्रज सूरी जानो, श्रुति दृष्टांत कहे मानो ॥ तिनतें निधि चारित धारी, जजो ज्ञानानंद अधिकारी ॥ दे० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद नवमुं ॥

॥ राग काफी ॥ सब जग जन ` जिहां

नक्त परमित जसु छाया रे ॥ ग० ॥ टेक ॥ तिनपर अरुण प्रत्न गज मैथुन, करत कलोल सुजाया रे ॥ ग०॥१॥ ताहू फलको पान चुगत हे, अनादि अनंत तसु संगें रे ॥ ता नीचें एक रहत मरगवा, खायो गज निज रंगें रे ॥ ग० ॥ २ ॥ गरदन मित जसु बाहर दीसे, कैसें जीवन वंठे रे ॥ कालांतर तेहथी गज जायो, मृगहन नरपति लंठे रे ॥ ग० ॥ ३ ॥ जिन दिन जे गज नरपति जाने, अपनो खोज गमावे रे ॥ तव निधि चारित्र ज्ञानानंदें, मातंग आसन पावे रे ॥ ग० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद पंदरमुं ॥

॥ राग सोयनी ॥ दीपक होत उजियारो ॥ दी०॥ टेक ॥ विन दीपक मंदिर अंधियारो, केसें करे उचियारो ॥ दी० ॥ १ ॥ घोर घटायें रयण अंधारी, जान न पदारथ सारो ॥ दी० ॥२॥ जकजक योगें कृत परिणति, निजगुण दीप वीसारो ॥ दी० ॥ विन दीपक चेतन जयो पशुपर, सनात्र सधारो ॥ दी० ॥ ४ ॥ सवजग तप जप विरया, आतम अनुजव धारो ॥ दी० ॥

नुजव अंधक नर ढूंढत, अनुजव दीप जगारो ॥ दी० ॥ ६ ॥ तातें अवधू मत उद्दराणी, ज्ञेय ज्ञान सुविचारो ॥ दी० ॥ ७ ॥ तेहथी निधि चारित रिधि पामी, ज्ञानानंद निहारो ॥ दी० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ पद शोळमुं ॥

॥ राग सोयनी ॥ प्यारी नेह लगारो ॥ प्या० ॥ टेक ॥ बिनप्यारी घर घरमें जटकत, कायर जाव दे-वांरो ॥ प्या० ॥ १ ॥ कुमतियोगें चार नगरमें, विविध रूप विसतारो ॥ प्या० ॥ २ ॥ पांच जातका वेस पहराया, निजप्यारी विन हारो ॥ प्या० ॥ ३ ॥ तेवीस विषयके फंदमें नाखी, पापथान विसगारो ॥ प्या० ॥ ४ ॥ हास्यादिक वज्र कोटें घेस्यो, निजसुध बुध विसरारो ॥ प्या० ॥ ५ ॥ तिनतें प्यारी युत निधिचारित, ज्ञानानंद लहे सारो ॥ प्या० ॥ ६ ॥

॥ पद सत्तरमुं ॥

॥ राग वरवा ॥ एक समीरका सहर बना हे, अदभूत पंच बाजार तना हे ॥ ए० ॥ टेक ॥ दस मारग दसहीं दरवाजे, चउ श्वासा चउ नगर विराजे ॥ एते ॥ १ ॥ तेवीस वसंत जिहां नितप्रति दीपे, खेत

देत सब जगकुं कीपे ॥ ए० ॥ आना जाना एकई कालें, एक विना रहे नगर विचालें ॥ ए० ॥ २ ॥ एक दरवगत नित्य अनित्यें, चटपट जाव वसे सब चित्तें ॥ ए० ॥ जिन दिन सघलो खोज गमावे, तो निधिचारित्र ज्ञान निपावे ॥ ए० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद अढारमुं ॥

॥ राग वरुवा ॥ गुरुगम अनुनव शैली धारो, इस पदका निर्वाह विचारो ॥ गु० ॥ टेक ॥ सरव समय रवि रुचिकर हीना, विविध स्वापदयुत गहन विलीना ॥गु०॥ १ ॥ काला मिरगा निज बल वन राजा, नितप्रति राज अखंड समाजा ॥ गु० ॥ निर्दय निज वैरीगण मारे, मास विना न जखे खिन सारे ॥ गु० ॥ २ ॥ चक्री हरिबल परमुख जोधा, पिण मिरगा नवि वस किया सोधा ॥गु०॥ तेहने पिन मिरग खिन जख कीधा, कुन समरथ वस करने सीधा ॥ गु० ॥ ३ ॥ अमर विरुद दरवें जग धारे, मरन जीवन नवि चेहुं सारे ॥ गु० ॥ इगदिन हरिथी नपुंसक जायो, अनंतवली पिण नहिं तोलायो ॥ गु० ॥ ॥ ४ ॥ एकहि घातें मिरगने मास्यो, कंठी रवनो

राज सुधाखो ॥ गु० ॥ तव निधिचारित्र कमला संगें, लहे निर्मल ज्ञानानंद रंगें ॥ गु० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद ओगणीशमुं ॥

॥ राग जंगला ॥ ज्ञान विचारो रे भाइ, गुरुगम शैली आदर संतो ॥ज्ञा०॥ टेक ॥ गगनमंडल गत विविध तूर धनी, घोर स्वरें कर वाजें ॥ पाथोरण विन घनाघन वरसे, गिरीषम ताप समाजे ॥ ज्ञा० ॥ ॥ १ ॥ यामें रहत पतासा कोरा, वजर गलें इगताने ॥ वासर विन अरुण प्रज भासे, तेजं कलहल भाने ॥ ज्ञा० ॥ २ ॥ मानस नहिं जिम मानस मेला, निरखत लहे आनंदं ॥ निधिचारित ज्ञानानंद प्रेमें, रमण करे सुखकंदें ॥ ज्ञा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद वीशमुं ॥

॥ राग जंगलो ॥ ग्यान विचारो सांई, झटपट अनुभव प्रीत लगासी ॥ग्या०॥ टेक ॥ जीर्ण कुटीयें चंपायेगल, कां लग वास रहासी ॥ घनाघन वरसत तटनी पूरें, आपोआप वहासी ॥ ग्या० ॥१॥ तातें अवधू चारने वरजी, निज सासू बतलावो ॥ चार पांच सखि वरगें हिलमिल, मोकुं हिरदय भावो ॥

ग्या० ॥ २ ॥ अष्टादस विध जोजन जिमो, तिरिवेणी जल न्हाइ ॥ पश्चिम पावड सासा मारग, वार उघाडो सांइ ॥ ग्या०॥ ३ ॥ विविध वाजित्र धनि सांजल निरखे, मुगताफल तरुसांइ ॥ तत्र निधि चारित्र ज्ञानानंदें, नाचे हरख जराइ ॥ ग्या० ॥४ ॥ इति ॥

॥ पद एकवीशमुं ॥

॥ राग तिल्लाना ॥ जोगीयासें यारी कीनी हो, ज्ञान दिनंदा ॥ जो० ॥ टेक ॥ ज्ञान दिनंदा त्रिभुवन चंदा, तटनी तटनि वसंदा, धरम जाव कगोट धरंदा, घाती जसम खिपंदा ॥ जो० ॥ १ ॥ सादि सांत दृढ आसनधारी, सुं निज परिणति नारी ॥ ज्ञेय मसाला प्रेमका प्याला, योग नींद सय सारी ॥ जो० ॥ २ ॥ तत्वविचार जटा वधारी, अनहद धुनि चित्त लाइ ॥ निधिचारित्र सुज सेजें प्यारी, ज्ञानानंद मचकाइ ॥ जो० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद बावीशमुं ॥

॥ राग तिल्लाना ॥ गगनें घन निरखानी हो, हरख सहानी ॥ ग० ॥ टेक ॥ तिहां शुचि दृग अनिसर निरखानी, परमानंद निसानी ॥ तट मुगताफ-

घरनी, निहचे तेहने जानी ॥ निधि संयम ते वा
धारी, ज्ञानानंद विलसानी रे ॥ वि० ॥ ४ ॥ इति

॥ पद चोवीशमुं ॥

॥ राग मल्हार ॥ मेरी तुं मेरी काहाडरे ॥ मे
॥ टेक ॥ मेरी प्यारी गुण गण भूषित, हिरदय हा
रपरे ॥ तुभविन नांहिं रहुं किण ठामें, जिम शि
सगति चरे रे ॥ मे० ॥ १ ॥ इम पियुवाणी सांभ
महिषी, परम परमोद वहे ॥ दंपति मिलकर सेजे
वैसें, अंतर तत्व गहे रे ॥ मे० ॥ २ ॥ अंगो अंग
फरसन कर प्रेमें, घन मुगतिक वरसावे ॥ तव नि-
धि संयम ज्ञानानंदें, शीतल जाव निपावे रे ॥मे०॥३

॥ पद पचीशमुं॥

॥ रागी गोडी ॥ निजधन काइ गमावे ॥ संतो नि-
ज० ॥ टेक ॥ बोए काम बंबूलके तेनें, आंब कहांसें
खावे ॥ वेलू पीलत तेल न नीकलें, मूरख जग कह-
लावे ॥संं०॥१॥ कोपी फणिधर रिजुता न पामे, तीम
जमवंस निहालो ॥ सेलडी गांठे रस नवि पामे, खं-
जन सेत न भालो ॥संं०॥२॥ अनुपम दूधे साप खि-
लावे, हालाहल होय जावे ॥ घनथी विन मगसिल

नवि नींजे, निंबडे मधूता न पावे ॥ सं० ॥ ३ ॥ पद विचार करी जाइ संतो, निधि चारित्र रमावो ॥ तव ज्ञानानंद पद अनुजवतां, कमला सहज निपावो ॥ सं० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद उवीशमुं ॥

॥ राग गोमी ॥ तनमय सदागम सेवो ॥ अवधू ॥ त० ॥ टेक ॥ जबलग सदागम सेवन नांहि, पखपातें सपटेवो ॥ रतन पुंज पाहन सुत जाने, चंदन इंधन सम देवो ॥ अ० ॥ १ ॥ मोटे मोटे पाहन तरुवर, रतन चंदन दिखलावे ॥ रासन कूतर हय गज मोलें, लेवे ते मूढ कहावे ॥ अ० ॥ २ ॥ रतन कंबल वलकल चीवरसम, चर्पण घृत पूरमाने ॥ सकल वसतु इग मोल चलावे, खोट साच नहीं जाने ॥ अ० ॥ ३ ॥ अन्याय पूर जन पदमें रहकर, क्युंकर लाज गमावो ॥ तेहथी निजपर संयम आदर, ज्ञानानंद रमावो ॥ अ० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद सत्तावीशमुं ॥

॥ राग विहाग ॥ हयक लान संग वारो ॥ संतो ॥ ह० ॥ टेक ॥ पवनवेग निज हय पर चढकर, कुंत

कृपाण शरधारो ॥ कूतरा कूतरी दासी इनकर, व
त्रूधर पासो ॥ सं० ॥१॥ विपद्दर अमृतपान संयो
निर्विप जाव वधारो ॥ सदागम संयम धर नृप
ना, निखिलपुरें वरतारो ॥ सं० ॥ २ ॥ जवलग
नो इरुक न मारे, दरशन नाण न पावो ॥ तेह
ना संयम पिण नांहिं, साध्य सिद्धि किम जावो
सं० ॥ ३ ॥ साधक सुन साधन नवि पामें, तेह
इरुक निवारो ॥ निधि सयंम ज्ञानानंद अनुन
परमानंद सुख धारो ॥ सं० ॥ ४ ॥

॥ पद अठावीशमुं ॥

॥ राग बिहाग ॥ इरुक सान संग नावो ॥ अव
धू ॥ इ० ॥ टेक ॥ जिम जिम निर्मल घनाघन व
रसे, महि नवपल्लव रावों, तिम तिम इरुकिय या
विकारें, अहनिस इरुक सरावो ॥ अ० ॥ १ ॥ काल
कुतरी पण छे तेहवी, सरिखो जोग मिलायो ॥ नि
जमति जोगें गिरिवर चढियो, जाति संगति टला
यो ॥ अ० ॥ २ ॥ नृपविन नृपनिति ते चलावे, जग
जन मान न माने ॥ तेहने गुरु जन हित धतलावे,
तोपिन ध्यान न जाने ॥ अ० ॥ ३ ॥ इरुक इरुक प-

कर, खेचरी मुद्रा धार ॥ सूखम पवने गगन मंरु-ल गत, दृष्टि पतंग पर सार ॥ सं० ॥ २ ॥ गुण श्रेणी गत फोक टालो, अप्रमत्त जाव वधार ॥ सहस पर थकत थिति खय, जग जस सूर विचार ॥ सं० ॥ ३ ॥ सकल परिधि काप संतो, वीर प्रमोद जराय ॥ ज्ञानानंद नवनिधि संयम, नाचे निरख हरखाय ॥ सं० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद एकत्रीशमुं ॥

॥ राग फींफोटी जंगला ॥ अनुजव रस गत माती, रंग राती ॥ अ०॥ टेक ॥ गगन मंरुलगत दृग अमि सरवर, निरखत प्रमद जराती ॥ ता तट दृग मुगताफल तरुवर, निकलंक फूल फल जाती ॥ रं० ॥ ॥ १ ॥ मुगतक अमिजल खावत पीवत, रंग खुमार घुमाती ॥ रं० ॥ अहनिशि शशि रवि करत विकारा, डुर्धर तिमिर हराती ॥ रं० ॥ २ ॥ अनहद धुनि संग शंकर नाचे, निस्पृह जाय रमाती॥ रं० ॥ निधि चारित्र ज्ञानानंद रंगें, गावत नाटक राती ॥ रं० ॥ ३ ॥ इति ॥

तरा कीना, मायामें लपटाना ॥ निधि संयम ज्ञा-
नानंद अनुनव, गुरुविन नांहिं लहानां रे ॥ वि० ॥ ३ ॥

॥ पद चोत्रीशमुं ॥

॥ राग चावक ॥ योगिया रे, गुरु विन ज्ञान न
जाया ॥ टेक ॥ डुर्धर केसरी बकरी जाइ, बकरी
वाघ बंधाया ॥ बकरी चढुटे वाघ नचावे, देखेजन
हरखाया रे ॥ गु० ॥ १ ॥ तुरिय वेग हय चाबुक
योगें, नाग कुटुंब नसाया ॥ समय अनादें इतउत
जटके, मम ज्ञायें जरमाया रे ॥ गु० ॥ २ ॥ खिन-
जर ज्ञानकी वात न जानी, अनुनव वासन जाया ॥
गुरु किरीया संयम ज्ञानानंद, चरण कमल लपटा-
या रे ॥ गु० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद पांत्रीशमुं ॥

॥ राग बसंत ॥ अचरज एक नजरगत आयो,
ज्ञानी गुरु बतलायो ए ॥ टेक ॥ त्रिभुवनमें एक बाल
कुमारी, विरुद सति कहलाया ए ॥ अ० ॥ १ ॥ वि-
न घरमां इग पलमें निपने, नंदन तिन सुखदायी
ए ॥ रूप अनूपा चार दीकरी, ते पिन योगन जाइ
ए ॥ अ० ॥ २ ॥ जेह जनक ते वल्लन तेहना, मात

रम पद लाइरे ॥ र० ॥ विविध तत्व विचार सुख- मी, ज्ञान दरस सुरजि चाइ रे ॥ र० ॥ २ ॥ अह- निस रवि शशि करत विकासा, सलील अमीरस धाइ रे ॥ र० ॥ विविध तूर धुनि सांजल वालम, सादवाद अवगाइ रे ॥ र० ॥ ३ ॥ ध्येय ध्यान लय चढीहे खुमारी, उतरे कबहु न रामी रे ॥ र० ॥ सुन निधि संयम घरनी वाचा, ज्ञानानंद सुख धामी- रे ॥ र० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ इतिश्री संयम तरंगः संपूर्णः ॥

॥ अथ ॥

श्रीजशोविजयजी कृत आनंदघनजीनी स्तुतिरूप अष्टपदी प्रारंभः ॥

॥ पद पहेलुं ॥

॥ राग कनडो ॥ मारग चलत चलत गात, आनंदघन प्यारे ॥ रहत आनंदभर पूर ॥ मा० ॥ ताको सरूप भूप, त्रिहु लोकथें न्यारो ॥ वरखत मुख पर नूर ॥ मा० ॥ १ ॥ सुमति सखीके संग, नित नित दोरत ॥ कबहु न होतही दूर ॥ जशविजय कहे सुनो हो आनंदघन, हम तुम मिले हजूर ॥ मा०॥२॥

॥ पद बीजुं ॥

॥ आनंद घनको आनंद, सुजशही गावत ॥ रहत आनंद सुमता संग ॥ आनंद० ॥ सुमति सखी और नवल आनंदघन, मिल रहे गंग तरंग ॥ आनं० ॥ ॥ १ ॥ मन मंजन करके निर्मल कीयो है चित्त

तापर लगायो है अविहड रंग ॥ जसविजय कहे सुनतही देखो, सुख पायो बोत अनंग ॥ आनं० ॥ २ ॥

॥ पद त्रीजुं ॥

॥ राग नायकी ताल चंपक ॥ आनंद कोउ नहिं पावे, जोइ पावे सोइ आनंदघन ध्यावे ॥ आ० ॥ आनंद कोन रूप कोन आनंदघन, आनंद गुण कोन लखावे ॥ आ० ॥ १ ॥ सहेज संतोष आनंद गुण प्रगटत, सब दुविधा मिट जावे ॥ जस कहे सोही आनंदघन पावत, अंतर ज्योत जगावे ॥ आ० ॥ २ ॥ इति

॥ पद चोथुं ॥

॥ राग ताल चंपक ॥ आनंद ठोर ठोर नहिं पाया, आनंद आनंदमें समाया ॥ आ० ॥ रति अरति दोउ संग लीय वरजित, अरथने हाथ तपाया ॥ आ० ॥ १ ॥ कोउ आनंदघन छिद्रही पेखत, जस राय संग चडी आया ॥ आनंदघन आनंदरस झीलत, देखतही जस गुण गाया ॥ आ० ॥ २ ॥ इति ॥

॥ पद पांचमुं ॥

॥ राग नायकी ॥ आनंद कोउ हम देखलावो,

॥ कहा ढूंढत तुं मूरख पंथी ॥ आनंद हाट न वेकावो ॥ आ० ॥ १ ॥ एसी दशा आनंद सम प्रगटत, ता सुख अलख लखावो ॥ जोइ पावे सोइ कछु न कहावत, सुजस गावत ताको वधावो ॥ आ० ॥ २ ॥

॥ पद छठुं ॥

॥ राग कानडो ताल रूपक ॥ आनंदकी गत आनंदघन जाणे ॥ आ० ॥ वाइ सुख सहज अचल अलख पद, वा सुख सुजस वखाने ॥ आ० ॥ १ ॥ सुजस विलास जब प्रगटे आनंदरस, आनंद अक्षय खजाने ॥ आ० ॥ २ ॥ एसी दशा जब प्रगटे चित्त अंतर, सोहि आनंदघन पिछाने ॥ आ० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद सातमुं ॥

॥ एरी आज आनंद जयो मेरे ॥ तेरो मुख निरख निरख रोम रोम, शीतल जयो अंगो अंग ॥ एरी० ॥ १ ॥ शुरू समजल समतारस जीलत, आनंदघन जयो अनंत रंग ॥ एरी० ॥ २ ॥ एसी आनंद दशा प्रगटी चित्त अंतर, ताको प्रजाव चलत निरमल गंग ॥ वाही गंग समता दोउ मिल रहे,

जसविजय जीवत ताके संग ॥ एरी० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद आठमुं ॥

॥ राग कानडो ताल ॥ आनंदघनके संग सुजसही मिले जब, तब आनंद सम जयो सुजस, पारस संग लोहा जो फरसत, कंचन होतही ताके कस ॥ आ० ॥ १ ॥ खीर नीर जो मिल रहे आनंद जस, सुमति सखीके संग जयो हे एकरस ॥ जव खपाइ सुजस विलास, जये सिद्ध स्वरूप लीये धस मस ॥ आ० ॥ २ ॥

॥ इति श्रीजसोविजयजी कृत आनंदघनजीनी स्तुतिरूप अष्टपदी संपूर्णा ॥

इति श्री जसविलास तथा विनय विलास अने ज्ञान विलासाख्य रागमाला समाप्ताः